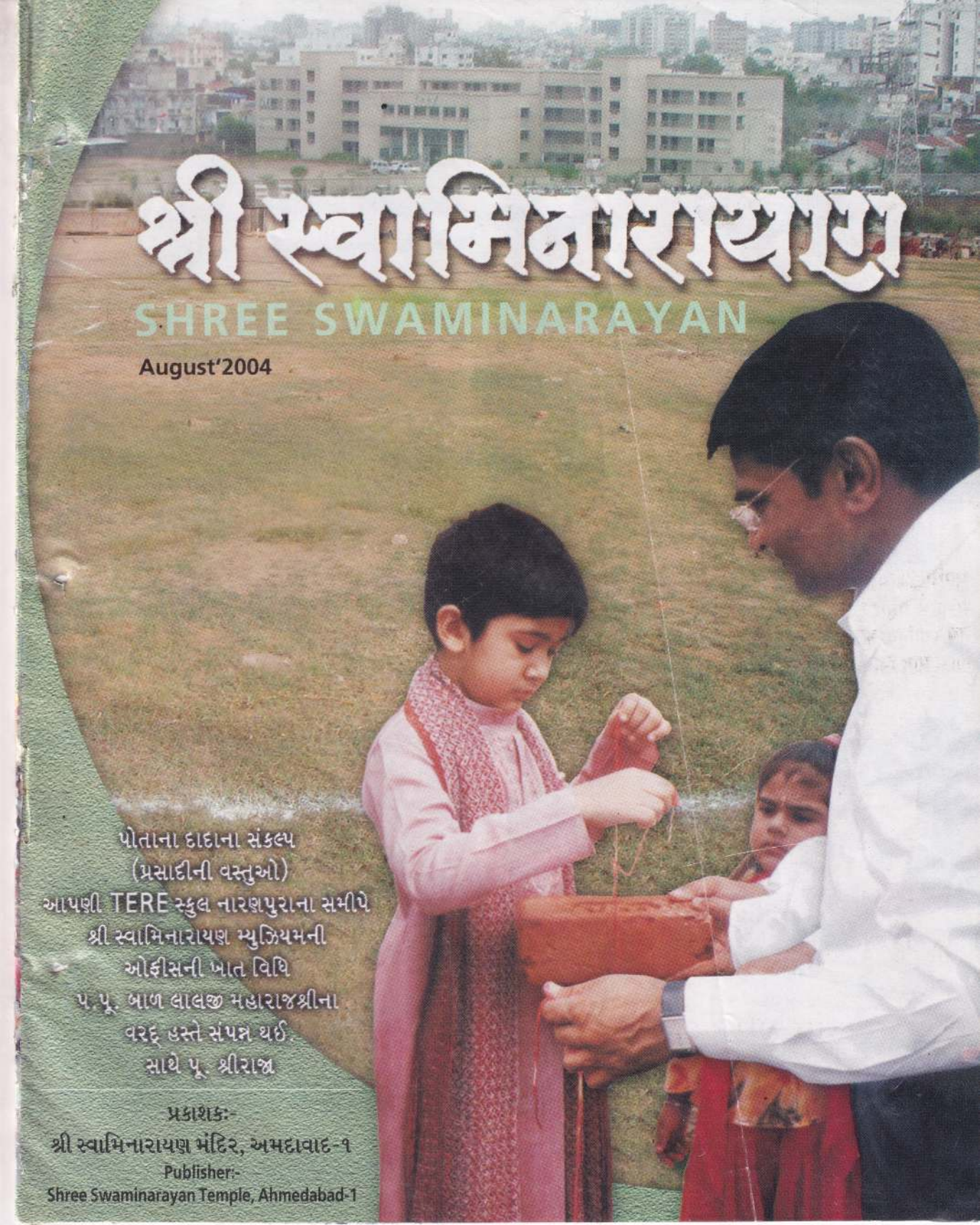
શ્રી સ્વામિનારાયણ

SHREE SWAMINARAYAN

August'2004



પોતાના દાદાના સંકલ્પ
(પ્રસાદીની વસ્તુઓ)
આપણી TERE સ્કુલ નારણપુરાના સમીપે
શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમની
ઓફીસની ખાત વિધિ
પ.પૂ. બાળ લાલજી મહારાજશ્રીના
વરદ્ હસ્તે સંપન્ન થઈ.
સાથે પૂ. શ્રીરાજ

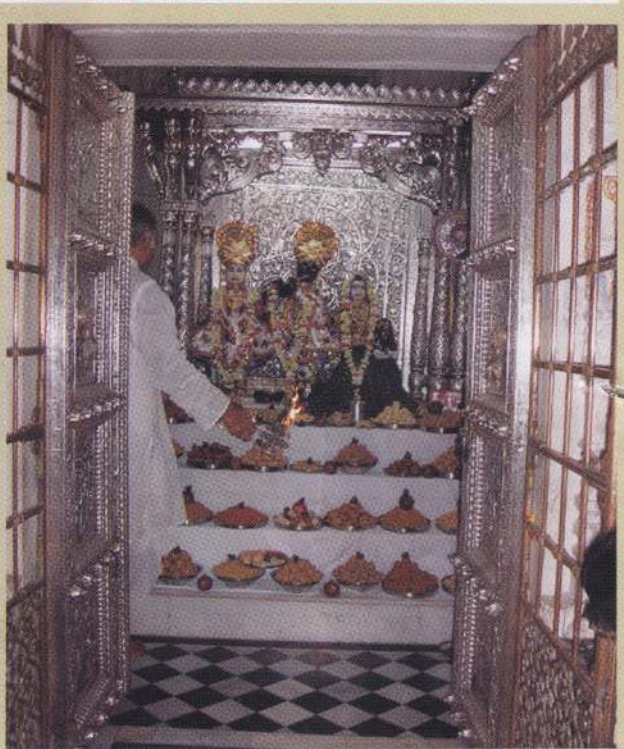
પ્રકાશક:-
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧
Publisher:-
Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



सुप्रसिद्ध अंबाजी तीर्थ पर प.भ. हरिकृष्णभाई ठाकर के यहाँ सत्संग सभा में पधारे हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री मंदिर में पधारे तब स्थानिक हरिभक्त और भाविक भक्तोने दर्शन आशीर्वाद का लाभ प्राप्त किया था ।



आबु रोड के श्री स्वामिनारायण आश्रम की मुलाकात के समय प.पू. लालजी महाराजश्री संत मंडल के साथ ।



अयोध्या स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर अन्नकुट की आरती उतारे हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु
आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स
०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
वंशपारंपरिक
देशमें ३०१-००
विदेश२००१-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ३ अगस्त -२००४

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा एवं भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	गुरु पूर्णिमा एवं प.पू. बाल लालजीका जन्मोत्सव	४
४.	झुलाऊंप्यारे को हिंडोले	६
५.	मन अधिक या वचन ?	८
६.	सत्संगीमात्रका - ध्रुव दिशाज्ञानयंत्र	११
७.	माँ-बाप बालकों को समय दें ?	१३
८.	सहजानंद रुपी सूर्य	१४
९.	ऐश्वर्य मूर्ति सच्चिदानंद स्वामी	१५
१०.	महासुख का मार्ग	१७
११.	दान की महिमा	१८
१२.	बाल वाटिका (१) संसार में रहकर सत्संग हो सकता है	१९
१३.	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

अधिक श्रावणमास अर्थात् भगवान का प्रिय नाम जिससे युक्त हो वह पुरुषोत्तम मास जिसमें भक्तजन भगवत् भक्ति करके भगवान के प्रिय बन सकते है । भारत भर के सभी संप्रदायो में तथा प्रत्येक देव मंदिरो में इस मास में विशेष भक्ति आराधन होती है । जिससे भगवत् प्राप्ति का मार्ग भटकते जीवों को मिलजाता है । पुर्ण पुस्त्रोत्तम की प्राप्ति अर्थात् आत्यन्तिक मोक्ष । जब तक आत्यन्तिक मोक्ष की प्राप्तीजीव को न हो तभी तक जीव को जन्म-मरण के बन्धन में रहना पडता है । पूर्ण पुस्त्रोत्तम नारायण के चरण की शरण के शिवाय सभी जगह काल का भय है । जहाँ काल का भय है वही मृत्यु अवश्यंभावी है । समय की जहाँ मर्यादा है वही मृत्यु का आगमन होता है । पूर्णपुस्त्रोत्तम नारायण के चरणारविंद में जो जीव पहुँचता है उसे काल का भय नहीं रहता है । इसी लिये वहाँ पहुँचकर जीव निर्भय बन जाता है । निर्भय होकर पुस्त्रोत्तम नारायण के चरण में भक्ति आराधना पूर्वक स्मरण करने का अवसर पुनः एक हजार दिन के बाद आता है । इसमें भक्ति आराधना के लियए अतिपवित्र तथा हरिको प्रिय ऐसे श्रावण मास को आने में छ हजार दिन बीत जाते हैं । अर्थात् अट्ठारह वर्ष के बादही अधिक श्रावण मास (पुस्त्रोत्तम मास) आता है । इतने लंबे समय के बाद आनेवाले ऐसे शुभ मोक्षकारी योग का अनंतकोटी ब्रह्मांड के अधिपति पूर्ण पुस्त्रोत्तम नारायण भगवान श्री स्वामिनाराणने अपने हाथों से अपनी बांहो में भरकर स्थापित किये हुए ऐसे परम कृपालु प्रत्यक्ष परमात्मा नरनारायणदेव के सांनिध्य में असंख्य भाविक भक्तों ने तन, मन, धन का समर्पण उन पर किया है । परमात्मा की कृपा अवश्य होगी और अन्त में परमात्मा के चरणों में आत्यन्तिक मोक्ष की प्राप्ति होगी ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जुलाई - २००४

२. गुपुपूर्णिमा के दिन अमदाबाद मंदिर में देश देशान्तर से संत हरिभक्तों द्वारा गुरु पूजन ।
४. प.भ. अनिलभाई मनन मोटर्स के नये शोरूम में पदार्पण । प.भ. कनुभाई पोपटलाल ठक्कर के यहाँ पदरापण सेटेलाईट । प.भ. प्रकाशकुमार जयंतीलाल पटेल के यहाँ पदार्पण, बोपल । प.भ. चिमनभाई परसोत्तमदास के यहाँ पदार्पण, सेटेलाईट । प.भ. कौशिकभाई सी. जोशी के यहाँ पदार्पण, नवरंगपुरा ।
५. प.भ. नारायणबाई ईश्वरभाई पटेल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण सोझा फार्म ।
७. बालवा गाँव में प.भ. भरतभाई जी चौधरी के यहाँ पदार्पण ।
११. प.पू. बाल लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ७वाँ जन्म दिन उन्हीं की उपस्थिति में सम्पन्न ।
१२. मे. इन्डिग्ल (इन्डिया) ओटो एसेसरीज की दुकान के उद्धाटन प्रसंग पर पदार्पण मीठाखली ।
प.भ. अमृतभाई वेलजीभाई गामेती के यहाँ पदार्पण, धाटलोडिया ।
१३. प.भ. जेठाभाई जीवीदास पटेल के यहाँ पदार्पण, राणीप ।
प.भ. रवीन्द्रभाई अमृतलाल सोमपुरा के यहाँ पदार्पण, राणीप ।
१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. घनश्यामभाई मूलजीभाई ठक्कर के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।
२०. अधिकमास में श्रीनरनारायणदेव का पाटोत्सव अभिषेक स्ववरद् हाथों से ।
२२. घनश्यामवाड़ी स्वागतहाल राणीप, पारायणकी पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।
२३. प.भ. घनश्यामभाई शकराभाई पटेल द्वारा आयोजित सभा में पदार्पण ।
२४-२५. अम्बाजी गाँव में प.भ. हरिकृष्णभाई ठक्कर के यहाँ सत्संग सभा में पदार्पण ।
२६. अधिक मास के निमित श्री रंगमहोल घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक स्व हस्त द्वारा ।
२८. प.भ. चन्द्रिकाबहन पोपटलाल ठक्कर के यहाँ पदार्फण सेक्टर ३० गांधीनगर ।
२९. अधिक मास में श्रीरंमगमहोल घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक स्वहस्त द्वारा
प.भ. दिनेशकुमार मगनलाल पटेल के यहाँ पदार्फण, राणीप ।
३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर मकाखाड़ कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।



भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की स्परेखा

जुलाई - २००४

२. गुरूपूर्णिमा के दिन अमदावाद मंदिर में देश देशान्तर से आये संत हरिभक्तों द्वारा गुरु पूजन ।
३-४. माउन्ट आबु में सत्संग सभा में पदार्पण ।
११. प.पू. बाल लालजी श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी का जन्मोत्सव स्वंय की उपस्थिति में ।
१६. नीलकंठ क्लासीस के उद्धाटन के अवप्रसंग पर पदार्पण ।
१७-१८. जयपुर (राज.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग सभा आयोजन स्वाध्यक्ष स्थान में ।
२०. राणीप घनश्याम वाडी में कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
२३. जुलाई से २५ अगस्त यु. के. तथा अमेरिका में सत्संग युवा शिबिर प्रसंग पर पदार्पण ।



गुरु पूर्णिमा एवं प.पू. बाल लालजीका जन्मोत्सव

- गोरधनभाई वी सीतापरा
(हरीवाडी-बापुनगर)

बहुत लोग सम्पूर्ण जीवन भर सत्संग करते हैं । मस्तक पर सफेद बाल हो जाते हैं । तो भी उन्हे ख्याल नहीं आता कि अपना गुरु कौन ? श्रीजी महाराजने व्यवस्था के लिए देश विभाग करके दो गादी बनाकर दोनों गादी पर दो आचार्य गुरु को स्थापित किया । दोनों गादी स्थानो पर धर्मवंशी आचार्यश्री की परंपरा प्रस्थापित किये । जो दोने देश कालूपुर (अहमदाबाद-वताल) दोनो गादी स्थापन कर विद्यमान आचार्य सत्संगी मात्र के गुरु स्थान पर हैं । श्रीजी महाराज द्वारा रचित अनेक शास्त्रों के आधारपर उत्तरदेश अर्थात् अहमदाबाद देश में रहनेवाले सत्संगी मात्र के गुरु विद्यमान नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री है । दक्षिण देश के सत्संगीमात्र के गुरु विद्यमान वडताल पीठाधिपति प.पू. राकेशप्रसादजी महाराज हैं । गुस्मूर्णिमा के दिन अपने गुरु का पूजन अर्चन अपने देश की मर्यादामें करना ही उचित हैं । यह आज्ञा शिष्य के हित में है तथा कल्याण के लिये है । गुरु पूर्णिमा के पवित्र दिन अहमदाबाद मंदिर के प्रसादी के सभा मंडप में ठसोठस भरी दिव्य सभा में मंदिर के महन्त शास्त्री स्वा. निर्गुणदासजी अपने प्रासंगिक प्रवचन में बताये कि अज्ञान से ज्ञान की तरफ लेजाने वाले तथा भगवान की पहचान करानेवाले को गुरु कहते हैं । जिसका आज पूजन है । धन सम्पत्ति कैसे मिले इस प्रकारका ज्ञान देने वाले विद्यागुरु तो बहुत मिलते हैं । लेकिन भगवत्प्राप्ति का मार्ग दिखाने वाले विरला ही मिलते है । गुरु पूर्णिमा के दिन व्यासपूजा होती है । क्योंकि गुरु पूर्णिमा व्यासजी का जन्म दिन है । व्यासजीने जीवोको भगवान की पहचान कराई इस लिये आज के दिन व्यासपूजन होता है । लेकिन हम सभी के दुःख, चिन्ता, कष्ट आदि को दूर करने के लिये, भगवत् प्राप्ति के लिये भगवान स्वामिनाारयण ने हम सभी त्यागी एवं गृहस्थों के लिये धर्मकुल में से ही गुरु स्थापित किये थे । अपने गुरु प.पू. आचार्य महाराजश्री रात दिन विचरण करके हम सभी का मार्ग दर्शन करते हैं । जगत के प्रत्येक जीव का कल्याण हो यह आपका संकल्प है । हम सभी की आत्मसर्पण की भावना होगी तो कहीं विघ्न नहीं आयेगा । और अक्षरधाम की प्राप्ति होगी । हम सभी उनके चरणों में प्रार्थना करें कि श्रीजी महाराज ने जिस मूर्ति नरनारायणदेव को अपनी बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किया उनके आश्रय से विचलित न हों और दृढ निष्ठा बनी रहै ।

हम सभी के गुरु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पू. महंत स्वामी की बात को दोहराते हुए कहे कि स्वामीने जो आशीर्वाद की बात कही, वह मेरे समझ से सभी में सद्बुद्धि आवे यही मेरा आशीर्वाद है । आज के दिन श्रीजी महाराज के चरणों में प्रार्थना करें कि हमें तथा आप सभी को सद्बुद्धि दें । भगवान नरनारायणदेव को कभी छोड़ना नहीं ।

श्रीजी महाराज स्वयं अपने बांहों में भरकर नरनारायण को प्रतिष्ठित किये हैं । मेरी आज्ञा, सूचना, आशीर्वाद जो भी आप सभी मानो लेकिन नरनारायणदेव का आश्रय छोड़कर कहीं किसी को जाना नहीं है । परोक्ष के एक पुस्तक में मैने वांचा कि परोक्ष के त्यागी गुरुओं की अपेक्षा स्वामिनारायण सम्प्रदाय के गृहस्थ आचार्य का नीयम कठिन है । यदि इन नियमों का पालन किया जाय तो ही दूसरे को कहा जा सकता है । गुरु सौ आना पाले तो शिष्य दो आना पालेगा । यह पद श्रीजी महाराजने हमें देकर अपने सम्बन्ध को स्थापित किया है । यह सम्बन्ध नित्य का है । महाराजने अपने कुटुम्बियों से छुड़ाकर देह के संबन्धी से दूर जन्मस्थल इत्यादि से दूरकर सभी को गौड़ मानकर हमें आप सभी के (सत्संग) के बीच में रखा है । आप लोगों के ध्यान रखने के लिये यह सम्बन्ध बनाया है । यह सम्बन्ध अनंतकाल तक बना रहे इसी में श्रीजी महाराज की प्रसन्नता है । कईबार हम सभा में यह बात कहते हैं कि विदेश में एक हरिभक्त के यहाँ पदार्पण करना था उसने कहा कि आप मेंरी गाडी के पीछे-पीछे आयें । लेकिन हमें तथा ड्राबर को बात-बात में ख्याल नहीं रहा परिणाम स्वस्म दूसरी एक गाड़ी जो उसी कलर की थी हमारे गाड़ी के सामने आ गयी और उसके पीछे पीछे कई मील तक निकल गये बाद में मैने ड्रायवर से पूछा कि कहीं दूसरी गाडी के पीछे तो नहीं चल रहे हो । बाद में मोबाइल फोन द्वारा ख्याल में आया और तीन धन्टे पहुँचने के स्थल पर लेट पहुंचे ठीक यही स्थिति अपनी हैं । गल्ती से कहीं गलत गुरु का पीछा तो नहीं कर रहे हैं अन्यथा ८४ लाख योनियों में ऐसे ही भटकना पड़ेगा । इसलिए जागृत होकर सचेत रहना होगा । महाराज द्वारा बताये गये नियमों को जिनलोगों ने तोडा उनका विलय हो गया । हमे श्रीजी महाराज की माला का मनका बनना है । श्रीजी महाराज की आज्ञा में रहकर श्री नरनारायणदेव का होकर ही सभी को रहना है । यही हमारा सन्देश है ।

ता. ११-७-०४ के दिन कालुपुर मंदिर में प्रसादी का सभा मंडप में भगवान के ८वें वंशज प.पू. बाल लालजी महाराज का ७वाँ जन्मोत्सव मनया गया । इस सभा मे मंदिर के महन्त शा.स्वा. निर्गुणदासजी ने बाल लालजी की एक आश्चर्यकारक चेष्टा का वर्णन करते हुए कहा कि - केवल दो दिन पूर्व ही लालजी महाराज के गले का आपरेशन हुआ, आपरेशन से पूर्व डॉ. ने कहा कि एनस्थिसिया का इन्जेक्सन देना है तो बाल लालने कहा कि आप इन्जेक्सन मेरे पास लाइये, मैं खुद इन्जेक्शन लगा लूंगा । भगवान हमारे साथ हैं । आप लोग अपने ढंग से आपरेशन कीजिए । बाद में बाल लालने स्वयं इन्जेक्सन लगा लिया डॉ. लोग आश्चर्यान्वित हो गये । और यह अनुभव किये कि यह कोई असाधारण बालक है । केवल दो दिन ही पूर्व जिसका आपरेशन हुआ हो वह सभा में आकर सभी की भावनाओं को पूर्ण कर रहा हो तो क्या यह साधारण बालक है ।

सभा में भूतपूर्व कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर के महन्त शा.स्वा. पी.पी. स्वामी भू.पू. छपैया के महन्त मूली के महन्त स्वामी ने बताया कि - पूज्य बाल लालजी का शौर्य आत्मविश्वास, नरनारायणदेव में निष्ठा चेष्टा, चरित्र, को देखें तो प्रत्यक्ष घनश्याम महाराज के गुण धर्म प्रगट हो जाते हैं । धर्मकुल के आश्रय तथा उनकी कृपा के बिना अक्षरधाम की टिकट मिल नहीं सकती । इसके साथ नरनारायणदेव में दृढ निष्ठा हो तो भी धर्मकुल प्रसन्न हो जाता है ।

अंत में जिसके एक एक बाक्य में अमाप रहस्य भरा हुआ है वह रहस्य समझ में आ जाय तो अमाप आनंद की अनुभूति होगी ऐसे विश्ववंदनीय प्रातः स्मरणीय प.पू. महाराजश्री ने अपने आशीर्वाद में बताया कि आज के इस दिन, इस दिव्य सभा में तथा श्री नरनारायणदेव से आशीर्वाद मांगने का समय है । हम दृढता के साथ मानते हैं कि सत्संग की प्लानिंग खुद महाराज ही करते हैं । मूली मंदिर की प्लानिंग में महाराजने रात्रि में ब्रह्मानंद स्वामी को जगाकर कहा कि इस स्थान पर मंदिर का निर्माण करिये । सम्पूर्ण

अनुसंधान पेईज नं. ७

झुलाऊं प्यारे को हिंडोले

- शास्त्री स्वामी घनश्यामप्रकाशदास (महंत नारायणघाट)



समग्र भारत भूमि का सौन्दर्य काश्मीर प्रदेश में फूल की बहार खिल उठती है । एक समय एक कविराज काश्मीर की सुन्दरता देखकर, आह्लादक खुश्नुमा वातावरण देखकर, खिली हुई हरियाली देखकर पुल्कित कवि के हृदय में से सरल भावना फूट पड़ी कि सम्पूर्ण पृथ्वी का कोई स्वर्ग हो तो वह है काश्मीर ।

यह सुनकर बगल में से जाते हुए काठियावाडी काका मुस्काते हुये कहने लगा कि हम आजतक हिंडोले पर झूलने का आनंद नहीं लिये । स्वर्ग को शरमादे ऐसी सुन्दरता जब प्रभु को हिंडोले में पधराकर झूलाते हैं और वहीं सुन्दरता की मंहक चारो तरफ फैलजाती है, सुख का स्पन्दन होने लगता है ।

सम्पूर्ण वर्ष में श्रावण मास में भक्त के हृदय में भक्ति की लहर उठने लगती है प्रभु को रिझाने के लिये नाना प्रकार से पूजन, अर्चन, व्रत, दान, तप, दक्षिणा, कथा-कीर्तन तथा पारायणों द्वारा समाज का वातावरण भावनामय बन जाता है ।

इसमें भी हरि कों हिंडोले पर झुलाने के लिये भक्तों का हृदय ही हिंडोला बन जाता है ।

गोप गोपियां परमात्मा कृष्ण को बड़ अथवा पीपल की डाल पर झूला, डालकर झूलाती तब जाने कि धरती और आकाश आनंद विभोर होकर प्रभुचरण स्पर्श करने के लिये उछलता हो ऐसा लगता । जैसे जैसे झूले को वेग देते वैसे वैसे आनन्द मूर्ति प्रभु हास्य की किलकिलाहट से पूरे वातावरण को भरदेते थे । परिणाम स्वरूप यह मोहावनी हास्य चारो दिशाओं में फैलकर लोगों को आकृष्ट करने के लिये विवश कर देती थी । जो जिस रूप में होता उसी रूप में सबकुछ परित्याग करके वहीं दौड़ आती थी । नवधा भक्ति की विविधता में प्रभु के प्रति प्रेम व्यक्त करने की इस रीति से भगवान तथा भक्त दोनो का परस्पर संबन्ध एक दूसरे को सन्निकटमय बनादिया । गावों के हिन्डोले जो पेड़ पर होते जिसमें मोहकता थी, आत्मीयताथी एक दूसरे की भावनाओं को समझने की मान सिकवा थी । वही अब मंदिरे में आ गयी है - प्रभु को हिंडोले में बैठा कर झूलाते हैं - कोई डोरी के झूले में तो कोई चांदी की डोरी में तो कोई सोने की डोरी में झूला बनाकर झुलाते है । आज तो और भी आधुनिकी करण हो गया है कि इलेक्ट्रानिक्स मशीनों द्वारा नानाविध उपकरण बनाकर रीमोट कंट्रोल से झुलाते है । सामाजिक उन्नति के साथ ही भक्तों की मानसिकता, कलासूझ तथा अभिव्यक्ति, एवं व्यवस्था की उत्तरोत्तर वृद्धि के कारण भी सभी में परिवर्तन हुआ । प्रभु को नानाविध अलंकारो से अलंकृत करके झूले को सजाकर भक्तजन

आत्मशान्ति के लिये प्रदर्शन करते हैं। कभी तो हीरे से तो कभी फूलों से तो कभी चॉकलेट से कभी नोटो से प्रभु के हिंडोले को झुलाते हैं। नयन रम्य, मनभावन ऐसे हिंडोले पर विराजमान प्रभु स्मृति पटल से विसराते भी नहीं विसरते।

भगवान स्वामिनारायण तो अलग प्रकार की समाज में आभाप्रकट किये हैं। प्रत्येक उत्सव को एक अलग स्म दिया है चाहे वह जेतलपुर वाडी हो या पंचाला में जीणाभाई का दरबार हो, श्रीहरि जहाँ-जहाँ पधारते वहाँ एक तरफ कथा वार्ता अखाड़ा होता तो दूसरी तरफ कथापूर्ण होने के बाद श्रीहरि हिंडोला में झूलते रहते। गुलाब की पिचकारियों से हरिभक्तों के मन को आनंदित करदेने वाले श्रीहरि दादाखाचर के दरबार में जिस हिंडोले में झूले थे आज भी लगता है कि दादा के हृदय स्मी हिंडोल में झूल रहे हों। यह देखकर निष्कुलानंद स्वामी ने ऐसा कलात्मक अद्‌भुत हिंडोला वड़ताल में आम की डाल पर बनाया और प्रभु की प्रार्थना किये कि आप इस झूले में विराजमान होकर झूले। झूले की कला कृति देखकर स्वयं श्रीहरि आश्चर्ययुक्त हो गये। सन्तो-हरिभक्तों के हृदय में बहने वाली भक्ति की धारा को पूर्ण करने के लिये स्वयं बारह स्वस्मधारण करके हिंडोले पर झूलने लगे। और एक ही स्वस्म से बारह झूले बारह दरवाजों से दर्शन देने लगे। जय जयकार चारो तरफ होने लगी। भक्त वृन्द कोई गुलाब के फूल तो कोई पुष्पहार का प्रभु के ऊपर न्यौछावर करने लगे। रंगभरी पिचकारी से प्रभु को भींजाने लगे। अर्धस्मित प्रभु को देखकर सन्तवृन्द भी आनन्द युक्त हो गये थे। देखते देखते संगीत का सुर बजने लगा तथा झूले को लोग झुलाने लगे।

वडताल गाँव फूलना डिए हिंडलो आंबानी डाल,
बाध्यो आंबलियानी डाल वालो मारो हिचे हिंडोले आबानी डाल,
बार-बार बारणाो हिंडोले झूलता करी निष्कुलानंदे कमाल हिंडोले हिर झुलता रे .....
आव्यो श्रावण मास अनुपम हिंडोले माच्यो रे .....
जोई राजी थयो महेश तांडव नाच्यो रे .....
हिंडोर नामे होरे होरे झुलो महाराज .....
छेल झुलावुं रत्न हिंडोले, सुफल करुं सब काज हिंडोर नामे .....

इस प्रकार एक के बाद एक कीर्तनो की झडी लग गयी। आज भी वह कीर्तन गूंज रहा है। भक्तों को आनन्दित कर रहा है। झूलते हुए जबदूर जाते है तो दुःख की विरहाग्नि में भक्त की आराधना परिपुष्ट होती है। इस प्रकार हिन्डोले की डोर हाथ में सदा के लिये रखकर भक्ति के साथ ज्ञान का संयोजन होता रहे तो भक्तों के लिए चिरस्मरणीय सुखदायक यह हिंडोला दर्शन संजीवनी जैसा बना रहेगा।

अनुसंधान पेईज नं. ४ परनुं

प्लानिंग ब्रह्मानंद स्वामी को मंदिर निर्माण का बताया। और सभी पूर्व की प्लानिंग में परिवर्तन करा दिया। यह पद महाराज खुद बनाये हैं। इस लिये इस स्थान पर नियुक्ति भी खुद करते है। ऐसी मेरी दृढ मान्यता है। इसके साथ ही जो मनुष्य जिस गुण से युक्त हो उसे उस काम में लगाना चाहिए। इस शिक्षापत्री वचन का पालन स्वयं किये थे। आज भी उन्हे जिस काम मेंजिसे लगना हो वे ही निश्चित करते हैं। यदि अनुकूल वर्तन नहो तो बदली भी कर देते हैं।

यह बालक इस सम्प्रदाय का मूल धन है। हमारा पौत्र तथा लालजी महाराज का भले ही पुत्र हो, परंतु आप सबका भी यह मूडी है। आप सभी को इसका रक्षण करना है। पोषण करना है। भविष्य में इनके ऊपर बड़ी जवाबदारी आने वाली है। हम तथा लालजी महाराजश्रीने जो यश कमाया है उससे कहीं अधिक उत्तरदायित्व तथा यश कमाना है। महाराजने ऐसा ही सद्‌गुण बाल लालमें रखा है। हम सभी लोग श्री नरनारायणदेव के चरणों में ऐसी प्रार्थना करें कि इनमें धर्मपालना तथा लोगों से धर्मपालन करवाना ये दोनो जवाबदारी की क्षमता आवे, महाराज इन्हे स्वास्थ्य तथा दीर्घायुष्य प्रदान करें ऐसी प्रार्थना करियेगा, इतना कहकर विश्राम लेता हूँ।०

मन अधिक या वचन ?

- चन्द्रकान्त मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)



सभा में एकबार बहनें हमारे पास कीर्तन बोल रही थीं । एकबहन के ऊपर धूप आ रही थी । मैने कहा बहन आप छाया में बैठ जाइये । आपके ऊपर धूप आ रही है । वह बहन मेरी बात को अनसुनी करदी । थोड़ी अधिक धूप आ गयी तो पुनः कहा बहन आप छाया में आ जाइए, बहन ने कहा चलेगा महाराज ? यहीं ठीक है । थोड़ी देर के बाद धूप तेज लगने लगी तो स्वयं वहाँ से उठकर छाया में बैठ गयीं । लेकिन मेरे कहने पर नहीं उठी ।

बाद में हमने दूसरे बहनों से कहा कि उन छाया में बैठी बहनजी से पूछिये कि मन अधिक या वचन ? सभी लोग आपस में बात करने लगी लेकिन किसीने उस बहन से पूछा नहीं । बाद में मैने कहा कि आप में से कोई क्यों नहीं पूछता तो सभी ने कहा कि वह बहन उत्तर नहीं दे रही हैं । हमने कहा क्या उत्तर देंगी, जब आप को पूछना आये तो न ? हम एक प्रसंग पर बड़नगर गये थे । वहाँ एक बड़ के नीचे खूब भीड़ एकत्रिक थी । मैंने पूछा कि इतने लोंग क्यों एकत्रित हैं । लोगोने कहा कि एक बावाजी बैठे है वे बोलते नहीं है । हम भीड़ के बीच से बावाजी के पास गये और बावाजी से कहे बावाजी ? मौन रहने से कुछ नहीं मिलेगा । इस प्रकार बोलने पर बावा तमतमा उठा । घूर कर देखने लगा । ऐसे मर्म प्रहार करों तो अभी बहन भी बोलने लगेगी ।

श्रीजी महाराज कच्छ देश में मानकुंवा गाँव में विराजमान थे । मानवस्वभावानुसार स्त्रियों के साथ बात कर रहे थे । दैवी पुरुष सत्यपुरुष के वचन मानते है । और उसी का अनुसरण करतें हैं । हमारे वचन को जो माने उसी को हम बड़ा मनते है । वचन जोनमाने वह भले ही मेरे पास रात दिन रहता हो तो भी हम उसे दूर ही मानते हैं । श्रीकृष्ण भगवान के वचन का पालन करने से अर्जुन ने अपने आत्मीय जनों का संहार किया । फिर भी उसे पाप नहीं लगा । यह बड़ो के वचन सिद्धि का परिणाम है । छोटे बड़े सभी के वचन का आदर करना चाहिए । मन जैसा कहे वैसा व्यवहार करने से व्यक्ति फंसता जाता है । सत्पुरुष के वचन का अनुसरण करने से मन संयमित होता है ।

मनुष्य का मन बंचक है । मन मनुष्य को ललचाता है, फंसाता है । नचाता है । मन नीति-अनीति को देखता नहीं है । मन शुभ अशुभ को देखता नहीं । ''मन के हारे हार है मन के जीते जीत'', इस उक्ति पर विचार करें तो ब्रह्मा, शिव जैसे लोग भी मन के वशी भूत होकर जाल में फंसे हैं । संत, शास्त्रों के वचन पर विश्वास न करके स्वच्छन्द विचार करने से पतन ही होता है । मन के अनुसार चलता हैं उसका पतन होता है ।

दीपावली के दूसरे दिन मंदिर में अन्नकूट का भोग लगता है । ऐसे ही एक प्रसंग पर जूनागठ मंदिर में अन्नकूट की तैयारी हो रही थी सद्गुरु

श्री गुणातीतानंद स्वामीने दो संतो को बुलाया । ठाकुरजी के अन्नकूट के लिए आप दोनो टींबावाड़ी जाकर बकालु ले आओगे ? स्वामीने विवेक से पूछा ।

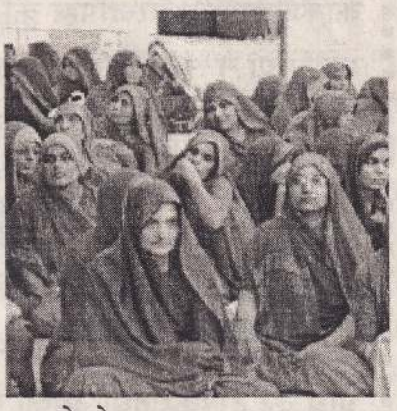
स्वामी आप हमारी उम्र की तरफ तो देखिये । टींबावाड़ी एक कोस दूर है । हमें चलने में कितनी तकलीफ होती है ? संत साकभांजी लेने नहीं गये ।

थोड़े समय वीतने के बाद वे ही संत स्वामी के पास आये । और कहे कि हमें वसंत पंचमी की समैया पर मूली जाना है । आप अवकास दीजिए। आचार्य श्री केशप्रसादजी महाराज पधारने वाले हैं । उनके दर्शन की भी उत्कंठा है ।

गुणातीतानंद स्वामी ने कहा । भले आप जायें हमें कोई तकलीफ नहीं हैं । लेकिन मूली तो चालिस पचास कोष दूर है । इतनी दूर कैसे जा सकेंगे ।

चलकर जायेंगे इसी लिये तो पहले से अवकाश लेने आयें हैं। धीरे-धीरे एक-एक कर जायेंगे । बडो का अनुसरण करने की अपेक्षा मन का अनुसरण करना मधुर लगता है । श्रीजी महाराज मानकुवा गाँव में बहनो के साथ स्वाभाविक बात कर रहे थे । हमे भगवान माने लेकिन हमारे वचन को न माने । हम उसका कुछ हानि नहीं करते कोई कहता महाराज ? हमारे गाँव पधारो, कोई भोजन के लिये बुलाता जैसा वे कहते वैसा ही कहते । हमें तो संतो के साथ, हरिभक्तों के साथ, दैवी मुमुक्षुओं के साथ सम्बन्ध रखना हैं, ना नहीं कह सकते अन्यथा विमुख होजावेगे । लेकिन हमारा कहा नहीं मानते ।

कौन आपका कहा नहीं मानता ? दालान में से आत्मानंद स्वामी ने पूछा । आत्मानंद स्वामी, परमचैतन्यानंद स्वामी, कैवल्यानंद स्वामी इत्यादि संत दालान में बैठकर वेदान्त के प्रश्न लिखते थे । साकार निराकार के खंडन-मंडन का अभ्यास



कर रहे थे ।

आप मानते हैं ? महाराज ने पूछा । मानते ही है । आप जो कहते हैं वही हम करते हैं । आपके विपरीत कोई व्यवहार हुआ हो तो आप कहें । यह सुनकर दूसरे संत भी बाहर आ गये । देखो, यह तलवार है कितनी धारदार हैं ? हाँ धारदार है आत्मानंद स्वामीने कहा । पुनः पूछने पर स्वामी मौन रहे । महाराज ने पूछा क्यों मौन हो गये । महाराजने कहा लंका की युद्ध में लक्ष्मणजी को बाण लगने से मूर्छा हो गयी, वैद्यने कहा द्रोणाचल पर्वत पर संजीवनी बूटी हैं प्रातः होने से पहले आजाय तो ही कार्य होगा । राघमन्द्रजी सभी की तरफ देखे, कोई जाने को तैयार नहीं था । परंन्तु हनुमानजी तो रामचन्द्रजी कहें उससे पहले निकल गये । उसीप्रकार हम भी कहते है कि गिरिनार पर्वत लाने में कौन समर्थ है । और कहने के साथ ही निसंशय रहित कौन तैयार होता है । मन में संकल्प नहीं होना चाहिए पर्वत कैसे उठेगा । भले ही वहाँ से एक पत्थर का टुकडा भी लाओगे तो मेरी आज्ञा का पालन हुआ ऐसा मैं समझूंगा ।

दिन हो हम कहें रात्रि है तो रात्रि समझने का रात्रि हो तो दिन समझने का । इस प्रकार दृढता से जो वचन माने तो वही मानना कहलायेगा । इसलिये हमें राघमन्द्रजी जैसा मानते हो तो हनुमान की तरह वचन पालन करना होगा । श्रीकृष्ण मानते हो तो गोवियों की तरह रहना होगा । इसप्रकार जो मुझे मानते है वे मेरे पास रहें जिन्हे श्रद्धा नहीं है वे यथेष्ट स्थान पर जा सकते है ।

संत लोग दुःखी हुए, विचार करने लगे । यह देखकर महाराजने कहा क्यों मुरझा रहे हो, विचार करने के लिए सम्पूर्ण रात्रि है । केशवजी की ओसारी में सभी एकत्रित होना, परस्पर चर्चा करना जो निर्णय हो हमे प्रातः बता देना ।

रात्रि में केशवजी की ओसारी में सभी एकत्रित हुए और चर्चा किये कि हम सभी श्रीजीकी वचन मानते हैं आज्ञा का उल्लंधन करते नहीं, तो

भूल कहाँ से हुई ? संत विचार करने लगे कि दिन हो उसे रात कहें यह मन से मान लिये, लेकिन सूर्य के प्रकाश को कैसे छिपाया जा सकता हैं। इस के अलावा महाराज कहते हों कि अन्दर से कहते हो कि बाहर से। अन्दर से कहें तो जो प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है उसको छिपाना पड़ेगा। बाहर और अन्दर दोनों में विलक्षणता तो है ही। अलग भासित होता है। भेद दृष्टि का समाधान कैसे किया जाय। सभी लोग मुक्त मुनि के सामने देखने लगे। मुक्त मुनि ने कहा इसका समाधान प्रातः महाराज से ही पूछ लेंगे। प्रातः महाराज दन्त धावन कर रहे थे और सामने से सन्तो को आते देखे तो पूछे कि क्या निर्णय करके आये। हे प्रभो ! अन्दर से जो आप कहते हैं वह ठीक है लेकिन बाहर से उसके विपरीत हैं, उसे कैसे दूर किया जाय ?

महाराजने कहा अन्दर से मान रहे हैं न ? हाँ महाराज ! संतोने कहा। अन्दर से जो माना जाय वही सत्य है और सभी मिथ्या है। जगत का सभी व्यवहार मिथ्या है, बाहर का व्यवहार दैत्य का है। अन्दर का व्यवहार सन्त का है। विपरीत भावना को निकाल दो ऐसा कहते हुए महाराज प्रसन्नता की वर्षा कर रहे थे।

स्वामी ! मुक्तमुनि को उद्देश्य करके कहने लगे। सुंदरजीभाई तथा हीरजीभाई कईबार समाचार भेंजते रहते हैं इसलिये भोजनादिक करके दोपहर के बाद भुजनगर जाना है।

नायग्रा फोल्स केनेडा

गुरु पूर्णिमा उत्सव

टोरेन्टो तथा आसपास रहने वाले केनेडा के सत्संगियों ने एक साथ मिलकर नायग्रा फोल्स में गुरूपूर्णा के अवशर पर सभा का आयोजन किया था।

खूब बड़ी संख्या में भाई-बहन हरिभक्तों का परिवार बस द्वारा नयग्रा गया था। रास्ते में हिमेल्टोन में रहते प.भ. श्री कानजीभाई के घर दोपहर की सभा तथा महाप्रसाद का सभी सत्संगियों ने लाभ लिया। प.पू. आचार्य महाराजश्री की प्रतिमा को सूखे पंचमेवा का हार अर्पण करके सभी हरिभक्तों ने अक्षत से पूजन अर्चन किया था। बोस्टन मंदिर में सेवा करते पू. हरिप्रियदासजी फोन द्वारा (गढडा प्रथम का २८वां) वचनामृत की सुंदर कथा का लाभ सभी को दिया था।

दोपहर में तीन बजे नायग्रा फोल्स जाने के समय विश्वप्रसिद्ध धोध को देखकर तथा उसकी रोशनी देखकर रात्रि को १० वजे टोरेन्टो के लिये निकल गये।

टोरेन्टो, केनेडा प्रति रविवार को ९ बजे तक सुन्दर कथा का आयोजन होता है। प.भ. रमेशभाई श्री शशीकान्तभाई, श्री विपुलभाई इत्यादि हरिभक्त इस सभा में आते है। "आज मारे ओरडे रे" के पद से आरम्भ करके वचनामृत आरती, धुनि, इत्यादि से युक्त यह सभा होती है। सभी हरिभक्त यहाँ निष्ठापूर्वक सत्संग करते हैं दूसरों से कराते भी है। सबसे पहले केनेडा में मन्दिर बने और उसमे नरनारायणदेव तथा घनश्याम महाराजकी प्रतिष्ठा प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से हो यही भगवान को प्रार्थना।

सत्संगीमात्रका - ध्रुव दिशाज्ञानयंत्र

• अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला •

अभी हाल में ही अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री लेकलेन्ड सीटी फ्लोरिडा (अमेरिका) में नूतन मंदिर निर्माण प्रसंग पर पधारे थे । वहाँ सत्संग सभा में आशीर्वाद देते हुए कहा कि -

शिक्षापत्री सत्संगिमात्र के लिए ध्रुव दिशायंत्र है । दो नाविक है । एक अपनी जहाज को जैसे तैसे समुद्र में चलाते जाता है । उसके पास ध्रुव दिशायंत्र नहीं है इसलिये वह कभी निश्चित स्थान पर नहीं पहुंच सकता । दूसरा नाविक है जिसके पास ध्रुव दिशा सूचक यंत्र है जिससे वह सही दिशा का ज्ञान करते हुए अपने निश्चित स्थान पर निश्चित स्म से पहुँच सकता है । उसे कोई चिन्ता नहीं है । केवल ध्रुव दिशा सूचक यंत्र द्वारा बताई गयी दिशा को पकड़े रखना है ।

हम सभी को भी श्रीजी महाराजने शिक्षापत्री स्मी ध्रुव दिशासूचक यंत्र दि.या है बस उसी का अनुसरण करना है । इसी में हम सभी का कल्याण है । वाकी तो श्रीजी महाराज कहते कि हमारे आप में कुछ लेना देना नहीं है ।

बात कितनी उत्तम है । श्रीजी महाराज शिक्षापत्री हम सभी को देकर कुछ बाकी नहीं रखे । पाश्चात्य देश-जैसे अमेरिका, केनेड़ा, ईग्लेन्ड वि में सरकारी या बड़ी-बड़ी कम्पनियों में कर्मचारी को जब नौकरी में लेना होता है, तब लिखित परीक्षा, इन्टरव्यू वि. पास करना होता है, बाद में स्क्रीन टेस्ट और ड्रग टेस्ट किया



जाता है । क्योंकि किसीकिसी देशों में सरकार ऐसा मानती है कि हमारा कर्मचारी कभी किसी प्रकार ड्रग ब्राउन सूगर, चरस, गांजा वि. इत्यादि का व्यसनी नहीं होना चाहिए ।

यही बात आज से सवा दोसौ वर्ष पहले श्रीजी महाराजने अपने सभी सत्संगीको समझाया है । हमारे आश्रित जो पुस्र स्त्री उन्हे व्यभिचार नहीं करना चाहिए । किसी प्रकार का व्यसन नहीं करना चाहिए । किसी प्रकार के मांदक द्रव्य का सेवन नहीं करना चाहिए । (शिक्षा. १८)

भगवान तो यहाँ तक आज्ञा किये हैं कि जिस औषधि में दारु या (आल्कोहल युक्त दवा) मांस हो उसका सेवन कभी नहीं करना चाहिए । (शिक्षा. ३१)

पश्चिम के देशों में जो बात स्वीकार्य हो जाती है उसे समग्र विश्व के देश स्वीकार करलेते है । वह बाद में सभी के लिए अनुकरणीय बन जाती है ।

इस प्रकार तो अनेको उदाहरण वर्षो पहले श्री सहजानंद स्वामी महाप्रभुने सभी को समझाया है कि कैसा करना चाहिए कैसा नहीं करना चाहिए ।

जगत के सभी धर्मशास्त्रों में जो बात कही गयी है वह सब इस छोटी सी धर्मपुस्तिका "शक्षापत्री" में समाविष्ट है ।

इन्फोर्मेशन टेक्नोलोजी की उर्ध्वगति के बाद आज सभी स्थानों पर प्रोफेसनल व्यवसाय की खूब बोलबाला है । इन्टेल कम्पनी का बीलगेट हो या अनपा इन्फोसीस का कृष्णमूर्ति ये सभी जगत के अति श्रेष्ठ धनिक कैसे बने ? इनका "मनी मेनेजमेन्ट" पावरफुल है । यह मनी मेनेजमेन्ट क्या है ? इस बात को भी श्रीजी महाराज वर्षो पूर्व शिक्षापत्री के माध्य से सभी को समझाये है ।

टाटा हो बिरला हों या अमेरिका

की आई.वी.एम. कंपनी हो । ये सभी कम्पनियां आज जगत में नामांकित हो गयी हैं । इसका कारण एक नहीं अपितु अनेक है । जैसे इसकी मैनेजमेन्ट व्यवस्था उत्तम है वह अपने सभी कर्मचारियों को यथायोग्य संमान करते हैं, इतना ही नहीं बल्कि जिसकी जो योग्यता होती है उसके अनुरूप उसे कार्यभार देते है जिससे उसकी कुशलता का लाभ कंपनि यो को सतत मिलता रहे ।

इसी प्रकार शिक्षापत्री के एक एक श्लोक को तथा आज्ञा को अरवाचीन समय के साथ तथा विश्व की आधुनिक गतिविधियों के साथ मूल्यांकन किया जाता तो सरलता से समझ में आजेयाग कि "अपनी शिक्षापत्री में क्या नहीं है" । इससे अधिक गौरव लेने की क्या बात हो सकती है । आप के अनुसार द्रव्य का खर्च करना अन्यथा दुःख भोगना पड़ेगा । (शिक्षापत्री १४५)

अपने व्यवहारकार्य के लिए धनकी जितनी आवश्यकता हो उसका लेखा-जोखा अपने हस्ताक्षरमें करते रहना । (शिक्षापत्री १४६)

अपने सेवक को अपने सामर्थ्यानुसार अन्नवस्त्रादिक द्वारा यथायोग्य संभावना करना । (शिक्षापत्री ६७)

बड़ी-बड़ी कंम्पनीयों का मालिक हो या छोटा बिजनेस करता हो, खेतीकरता हो या नौकरी करता हो, ये सभी गृहस्थ ही तो हैं ? जगत की नामांकित कंपनियाँ भी इन्ही चार आंज्ञाओं में रहकर व्यवहार तथा प्रगति कर रही हैं । इसीलिये उत्तरोत्तर वृद्धि और कीर्ति प्राप्त कर रही हैं ।

श्रीहरिने हमें संसार के जीवों की अपेक्षा भगवान के भक्त की कक्षा में रख दिया है । जगत काजीव सुखमय जीवन पसार कर सके इसलिये शिक्षापत्री में नानाविध आज्ञा कियें हैं । परंतु भगवान का भक्त बनना हो, भगवान के अक्षरधाम में जाना हो, सुखमयजीवन जीना हो तो शिक्षापत्री में बताई गयी आज्ञाओं का निष्ठापूर्वक पालन करना होगा ।

प्रत्येक श्लोक को समकालीन समय के साथ मूल्यांकन करें तो स्पष्ट समझमें आजायेगा कि -

सहजानंद स्वामी महाप्रभुने "अपने धर्म की रक्षा करने वाले और शास्त्र के विषय में प्रमाणरूप श्रीमन्नारायण की स्मृति के साथ जो वर्तन करते हैं, उन्हें मेरा हार्दिक आशीर्वाद हैं ऐसा वांचना" ऐसा आशीर्वाद देकर शिक्षापत्री स्मी जो मूल्यवान पत्री भेंजी है वह कितनी मूल्यवान दिव्य और अलौकिक है ।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इनचारों पुरुषार्थों की प्राप्ति हेतु सर्वजीव को हित करने वाली शिक्षापत्री एक मात्र साधन है । यह ऐसी ध्रुव दिशा सूचक यन्त्र है । जिसके सहारे निश्चिंत होकर स्वगन्तव्य स्थान पर पहुंचा जा सकता है ।

जिसके रोम रोम में अनंत कोटी ब्रह्मांड है ऐसे महाउपकारी प्रभु श्री पुरुषोत्तम नारायण ऐसी ध्रुव दिशामानयंत्र । दिये हैं तो उसी का सहारा लेना श्रेयस्कर होगा, अन्यथा जीवन भर भटकना ही पड़ेगा ।

इसीलिये तो नित्य प्रातः पूजा में शिक्षापत्री का पाठ करने की आज्ञा किये हैं । अपने आश्रितजनों के लिए पितातुल्य हानिलाभ का मार्ग बताकर शिक्षापत्री द्वारा आज्ञा किये है ।

एक वृद्धा माता जीवन पर्यन्त शिक्षापत्री की आज्ञा में वर्तन किया । केवल स्वामिनारायण भगवान हमारे हैं । शिक्षापत्री ही हमारा धर्म है । इस प्रकार दृढता पूर्वक अपने जीवन का पालन किया । अन्त में भगवत् पार्षद वृद्धामता कोलेने आये ।

वृद्धा माताने कहा आपलोग कौन हैं ? मैं आप लोगों को नहीं जानती, भगवान स्वामिनारायण लेने आयेंगे । वही लेने आयेंगे, उनके बिना नहीं जाऊंगी ।

अंत में श्वेत वस्त्रधारी श्रीहरि शोभायमान रथ में लेने आये मंद-मंद हांस करते हुए बोले चलो मेरे साथ ।

लौकिक अलौकिक दोनो प्रकार के सुख देने वाली यह शिक्षापत्री है ।

माँ-बाप बालकों को समय दें ?

- प्रो. ए. आर. दलाल
(श्री सहजानंद आर्टस-कोमर्स कोलेज)



सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री में आज्ञा किया हैं कि भगवान के भक्त को चाहिए कि बिना कारण से समय निरर्थक नहीं बिताना चाहिए ।

संसार में रहना है तो बिना प्रवृत्ति के सम्भव नहीं । जगत संबन्धी प्रवृत्ति में धन कमाना अथवा परिवारकी परवरिस मुख्य होती है । (''स्वामिनारायण'' जान्यु.-०४)

मनुष्य को धन कमाना या परिवार का भरण पोषण करना यह दोने समभाव से नहीं करे तो नाना विध प्रश्न खड़े होते हैं । आज के इस प्रवृत्तिशील युग में माता-पिता तथा सन्तानों के प्रति सम्बन्ध समझने योग्य है । ऐसा समजशास्त्री एवं सामाजिक संगठन के लोग मानते हैं। इस लिये नीचे अनुसार ध्यान देने योग्य है -

१. आज संतान के मित्रों के विषय में जानकारी कम होती है क्यों कि एकदूसरे घर आनेजाने के बदले में फोन से व्यवहार करलेते है । -

२. जब मा-बाप बालकों की प्रवृत्ति तथा उनके मित्रों के विषय में जानकारी करते है, तब तक तो देर होगयी होती हैं और परिणाम स्वस्प रोज-बरोज समाज के सामने आता है ।

३. आज के माता-पिता तथा सन्तान इस प्रकार की आधुनिकता में जी रहे है कि घर के बाहर का वातावरण जैसा हो गया है । भीतर मोबाईल कल्चर, टी.वी. सीरीयल तथा साईबर काफे के कल्चर में मानसिकता तथा विचारधारा बदल गयी है । मां-बाप आधुनिकतम में मानने लगे हैं साथ ही उनकी सन्तान भी फैंसन की दौड़ में लग गयी हैं ।

४. आज मां-बाप अपनी संतानो को अंग्रेजी माध्यम में शिक्षण देकर अच्छे कपडे, मौतिक साधन इत्यादि की व्यवस्था करके आदर्श भूमिका में संतोष मानते हैं ।

५. वर्तमान समय में प्रायः मां-बाप धनोपार्जन तथा प्रतिष्ठा हासल करने में लगे रहने के कारण अपनी संतानो के विकास में योग्य मार्ग-दर्शन, प्रेरणा नहीं दे पाते हैं परिणाम स्वस्प बालक एकाकी अनुभव करने लगता है और मा-बाप से दूर होने लगता है साथ ही किसी दोष का भोग बनजाता हैं ।

उपरोक्त विषयो पर विचार करने के लिये नीचे दर्शाये गये विषयों पर विचार किया जा सकता हैं ।

दिसम्बर २००३ के ''स्वामिनारायण'' अंक में वजन तथा भजन नियमित करना, ''वजन बढने नहीं देना, भजन घटने नही देना'' यहाँ भजन अर्थात् प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करना तथा कुटुम्ब की सेवा से पारिवारिक प्रेम प्राप्त करना ।

कुटुम्ब की सेवा के लिये १. बदलती हुइ सामाजिक परिस्थिति में माता-पिता तथा सन्तानों के लिये आत्मीय प्रेम जस्री है । पहले के समय में रात्रिभोजन के समय या बाद में प्रेमालु गोष्ठी होती थी, चर्चा होती, प्रसंगानुस्प संवाद होता और निर्णय लिया जाता जो आज परमावश्यक है ।

२. आज मां-बाप को तथा बालकों को मा-बाप के विश्वास जीतने की जस्रत है । दोनो को

एकदूसरे के लिये वफादारी के साथ पूरक बनना होगा ।

३. मां-बाप अपनी सन्तानों को भौतिक सुख साधन तो देते हैं लेकिन बदलते जमाने के साथ जीवन जीने की शिक्षा नहीं हेते । कभी तो ऐसा भी बनता है कि ऐसे मा-बाप के पास शिक्षा का अभाव होने से विशेष हानि का सामना करना पडता है । इसके लिये केवल मा-बाप का ही उत्तरदायित्व नहीं होता । बल्कि सामाजिक संस्थायें भी इसमें सहयोग कर सकती हैं । जिससे आध्यात्मिक मार्ग से नई पीढी को नई दिशा मिल सके ।

४. अमेरिका के रथचाल्डु नामक अरबोपति से उसके सफलता के रहस्य को बताने के लिये कहा गया, तब उसने बताया कि - मैं जब से समझदार हुआ तब से मैंने निश्चित किया कि कुछ करने के बाद भले ही पश्चाताप करना पडे लेकिन बिना किये रहना नहीं है । जो कुछ गलत काम हो गया हो तो उसको सुधारने का रास्ता हो सकता है, जब काम ही नहीं करेगा तो सदा के लिये सभी मार्ग बाधित होजायेगे । जो समयबीत जाता है वह पुनः वापस आता नहीं, इसलिए समय का लाभ सभी को ले ही लेना चाहिए ।

इसलिए कहा जा सकता है कि आप मा-बाप के स्प में किसकी मदद कर रहे हैं ? आपके सिवा और कौन है जो बालक का उद्धारक है, आप खुद मित्र, शुभेच्छुक बनकर सहायक बनें तो उन्नति होगी अन्यथा समाज भी ठुकरादेगा । आपके प्रेम में वशीभूत होकर बालक पारिवारिक बन्धन में बंधेगा और आत्मसंतोष दोनो को होगा ।

इस प्रकार मा-बाप केवल मा-बाप ही स्वयं को न समझें बल्कि बालकों के लिए मित्र भी बनें और बालकों को परिवार का एक सदस्य भी समझे, उनके लिए पूरा समय दें जिससे उनके भीतर के दुर्गुण निकलें, सद्‌गुणों का प्रकाश हो, समाज को कुछ देस कें, उदाहरण के स्प में प्रस्तुत हों । आज की मांग भी यही है ।

इसलिये कहा जाता है कि "जीवन ही एख पर्व हैं कोई पारिवारिक या धार्मिक कार्य किये बिना कैसे जाने दें । "

"जीवन अलभ्य है जीवन सौभाग्य है"

सहजानंद स्मी सूर्य

पंचाल में महाराज संतो के साथ अनेकस्प धारण करके अद्‌भुतरास खेले और सन्तो को अनहद सुख दिये । इस प्रसंग पर सम्पूर्ण गाँव को महारजने भोजन कराकर महा उत्सव किया । हजारो ब्राह्मण, संत, हरिभक्त इस उत्सव में भोजन किये । सभी भोजन करके तृप्त हो गये । महाराजने पूछा, भोजन करने के लिये अब कोई बाकी रह गया हैं ? तो भोजन पीरसने वाले हरिभक्तों ने कहा, महाराज ? सभी भोजन करके तृप्त हुए हैं । सभी के निवास स्थान पर जाकर पूछा आये हैं कोई बाकी नहीं है ।

परंतु महाराज की दृष्टि से कैसे कोई बाकी रह सकता है । दूर नदी के उसपार पागल जैसे धुमने फिरने वाले को देखकर महाराज ने पूछा, उन सब को भोजन कराये ? किसीने कहा महाराज ये बकारादि अक्षर वाले बाधरी हैं दिन दहाणें बकरा, खरगोस, हरिण इत्यादि को मारकर खाजाते हैं । ऐसे पापियो को कौन खिलायेगा ।

महाराज मंद-मंद हसने लगे और बोले कि "सूर्य किसी एक के लिये नहीं उगता सभी के लिये उगता है । वह पापी-पुण्यात्मा दोनो को समान प्रकाश देता है । मेघ वरसता है वह सभी के खेतमें वरसता है वह भी किसी में भेदभाव नहीं रखता । उसी प्रकार आज तो सहजानंद स्मी सूर्य उदित हुआ है । हमें तो सभी का कल्याण करना है । इस लिये नदी के उसपार जाकर उन सभी को बुला लाओ उन्हे भी भोजन कराकर तृप्त करेंगे ।

दो हरिभक्त सामने के घाट पर जाकर सभी को भोजन के लिये बुला लाये । महाराज स्वयं परसकर खिलाये । सभी को पूछ-पूछ करके बड़े प्रेम से भोजन कराये । उन सभी के हृदय में महाराज की मूर्ति बैठ गयी । वे सभी तृप्त हो गये । प्रसन्न हो गये । वहाँ उपस्थित सभी को सहजानंदस्मी सूर्य का ऐसा दिव्यदर्शन हुआ । अपने को बड़भागी मानने लगे ।

ऐश्वर्य मूर्ति सच्चिदानंद स्वामी

- सोनी भगवानदास वेलजीभाई (मोरबी)

सच्चिदानंद स्वामी हालार देश के नव योगेश्वरों में एक महान समर्थ संत थे । महाराज का उनके ऊपर अपार प्रेम था ।

स्वामिनारायण संप्रदाय में सिच्चदानंद स्वामी को ऐश्वर्य मूर्ति कहा गया है । महाराज की कृपा से अखंड समाधि की स्थिति प्राप्त थी । महाराज की कृपा से ऐश्वर्य भी बताते थे । कभी तो बिन वरसात की वरसात करा देते थे।

महाराज के दर्शन हेतु तो पागल हो जाते थे । महाराज को लिपट जाते तो छोड़ते नही थे । ऐसी स्थिति में तीन चार दरबार लग कर छोडाते थे।

सच्चिदानंद स्वामी को जब महाराज डांटते तो उनके रोंये रोयें से रक्त वहजाता था । जिससे महाराज उत्सव में सच्चिदानंद स्वामी को साथ रखते थे ।

गढडा की लक्ष्मीवाड़ी में सच्चिदानंद स्वामी रहते और सेवा-भजन करते । महाराज जब बाहर जाते तब सच्चिदानंद स्वामी को स्म में बन्द करके बाहर से ताला मार देते थे । वे फिरभी वहाँ से निकल कर पशुपक्षी से श्रीजी महाराज का हाल समाचार पूछते । ऐसे विरही सन्त थे ।

एकबार माड़की घोड़ी को लेकर महाराज बाहर जा रहे थे - उस समय सच्चिदानंद स्वमी उनके साथ चल रहे थे । श्रीजी महाराज ने सच्चिदानंद स्वामी को कहा या तो आगे चलिए या तो पीछे चलिये । रास्ता छोटा है । अगल बगल कांटे है आपके पैर में धंस जायेगे और खून निकलेगा ।

तब सच्चिदानंद स्वामी ने कहा महाराज ? आगे चलने पर आपके मुखारवृन्द का दर्शन नहीं होगा और पीछे चलने पर भी आपके मुखारवृन्द का दर्शन नहीं होगा । इसलिये बगल-बगल में चल रहा हूँ । भले खून निकले । श्रीजी महाराजने कहा सच्चिदानंद स्वामी मेरे में अधिक आसक्ति रखोगे तो मरने पर भूत बनोगे । स्वामीने कहा महाराज भूत तो होंगे हम लेकिन पकड़ेगे आपको ही और आप कांपते हुए कहेंगे कि मैं सच्चिदानंद स्वामी हूँ ।

मैं कही नही जाऊँगा यदि इस दरबार में कोई कितना भी पीड़ा दे, मारे, हाथ पैर तोड़ दे तो भी आपके प्रति अथवा मारने वाले के प्रति अभाव नहीं आयेगा ।

इतना ही नहीं सन्तों हरिभक्तों के जूठे पत्तल में से दाना बीनकर खाऊँगा लेकिन आपका आश्रय छोडूंगा नहीं । आपके दर्शन बिना शांति नहीं ।

श्रीजी महाराज यह सुनकर स्वामी के ऊपर बहुत प्रसन्न हो गए । और कहने लगे कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड का प्रलय हो जाय तो भी ऐसे सन्त को कभी त्यागना नहीं ऐसा प्रेम था महाराज का ।

जीवाखाचर दादाखाचर के दादा थे । दादाखाचर के ऊपर अपार प्रेम था । महाराज हर समय दादाखाचर की प्रसंशा करते जीवाखाचर को यह अच्छा नहीं लगता था ।

एक समय महाराज की माणकी घोड़ी के साथ अपनी घोड़ी दौडाने की शर्त जीवाखाचरने की और कहा कि जो हार जायेगा उसे अपनी घोड़ी देनी पड़ेगी । महाराज जीवाखाचर के कपट को जान गये फिरभी शर्त स्वीकार लिए ।

जीवाखाचर कपटी थे । उनकी इच्छा ऐसी थी कि जब खूब बेग में दोनो घोड़ी दौड़ेगी उसी समय महाराज को माणकीके साथ खांयी में ढकेल देंगे । लेकिन उस मूर्ख को यह पता नहीं था जो जगत का स्वामी है उसी कै प्रति यह भाव रखता है ।

गढड़ा लक्ष्मीवाडी में सच्चिदानंद स्वामी रहते थे और भजन-सेवा का कार्य करते थे । महाराज की कृपा से अन्तर्ध्यान से सब जान लेते थे । और यह बात भी जान लिए की महाराज को माणकी के साथ जीवाखाचर खांयी में गिरादेगा । स्वयं ही आसन पर खड़े हो कर सूक्ष्म स्म धारण करके जीवाखाचर की घोडीमें प्रवेश किया और जहाँ खाई आई तब जीवा खाचरको और उनकी घोड़ी को खाई में डाल दीया । श्रीजी

महाराज ने कहा वाह ! जीवाखाचर ऐसा तेरा कपट ! ब्रह्मांड की माया का पार लग सकता है परंतु तेरी माया का अंत नहीं है ।

दुर्वाषा मुनि हजारो गोपिओ का भोजन खा गए । इसलिए जीवाखाचरने शंका की कि व्यासमुनिने गप-गोले उड़ाये हैं । मात्र एक ऋषि हजारो गोपिओं का भोजन खा शकतें हैं ?

महाराज को प्रेम दिखाने के लिए जीवा खाचरने पांचसो परमहंसो को भोजन के लिए आमंत्रण दिया और रसोई सारी बना दी । वहाँ महाराजने जीवाखाचर से कहा कि हमारे सच्चिदानंद स्वामी को भोजन करना है । तब जीवाखाचरने कहा ठीक है महाराज ! महाराजने सच्चिदानंद स्वामी को भोजन करने के लिए बुलाया । सच्चिदानंद स्वामी मनमें महाराज का स्मरण करके भोजन करने बैठे और पांचसो परमहंस के लिए जो भोजन बनाया था वह अकेले ही खा गए ।

जीवा खाचरने दूसरी रसोई बनाकर पहमहंसो को खिलाई । जीवाखाचर का अभिमान उतर गया । व्यास मुनि के बचन में विश्वास न था इसलिए महाराजने जीवा खाचर को अपनी लीला दिखाई ।

मांडल धार में हरिभक्तोने गन्ने की सीमा बनाई थी । बाबाओं की जमात गन्ने की सीमा में आई और ८० रवा गुड़ मांगने लगे और कहा की अगर ८० रवा गुड़ नहीं देंगे तो गुड़ पेरने वाली मशीन बंद कर देंगे । ऐसी बात से भक्त उलझन में पड़ गए और गढ़डा श्रीजी महाराज के पास जाकर सारी बात बता दी । तब श्रीजी महाराजने कहा आप बिलकुल चिंता मत करिए । सच्चिचदानंद स्वामीको महाराजने तुरंत बुलवाया । आपको हरिभक्तो के साथ मांडवधार जाना है । और सारी बात उनको भी बताई । इसलिए आप जाइए और बाबा को चमत्कार दिखाकर रवाना कर दीजिए । सच्चिानंद स्वामी मांडवधार भक्तो के साथ दौड़ आए । और गन्ने की सीमा में आए और भक्तो को कहा एक कच्ची रस्सी का गेंदा लाईए । भक्त गेंद लेकर आए, स्वामीने कहा रस्सी का एक कोना चूल्हे से बांधकर आइए । और एक कोना मेरी कमर पर बांधिए बाद में श्रीजी महाराज का ध्यान किया । और रस निकलना शुरु हो गया और रसकी कुंडियां भरने लगी । बाबा की जमातने स्वामी का यह चमत्कार देखकर तुरंत ही भाग गई । मनुष्यो से न हो सके ऐसा काम तो सच्चिदानंद स्वामी श्रीजी महाराजकी कृपा से करतें थें ।

एकबार पीपलीया गाँव में सच्चिदानंद स्वामी आए थे । और मंदिर में कथा वार्ता कर रहें थे । हरिभक्तो को सत्संग का बोध दे रहें थे ।

मंदिर में पीपल के दो पेड़ थे और उसके आसपास दो बील थी । उसमें दो बड़े फणीधर नाग रहते थे । सच्चिदानंद स्वामी कथा वार्ता करते और ध्यान में बैठते तब पीपल के थड़ में से निकलकर स्वामी के गले में लिपटकर शंकर की जटा की तरह से दोनों नाग स्वामी के मस्तक पर फन निकालकर बैठ गए । जब ध्यान में से वे जगे तब दोनो नाग मस्तक पर से उतरकर उनके दर्शन करके पेड़ में चले गए । हरिभक्तों ने यह अद्‌भुत चमत्कार देखकर स्वामीजी के पास से कंठी बंधवाई और पूरा गाँव सत्संगी बन गया ।

श्रीजी महाराजने एकबार सच्चिदानंद को बुलवाया और कहा आज रात भगुजी का आयुष्य पुरा हो रहा है । तो आप दरवाजे पर बैठना और काल अंदर आए तो आप रोकना उसे अंदर मत आने देना । बराबर मध्यरात्रि को काल आया तब सच्चिदानंद स्वामी बोले खबरदार जो अंदर आया तो ! फिर भी काल अंदर आया इसीलिए स्वामी ने अपने आगे पड़े हुए हल से उस पर जोर से प्रहार किया कि काल चिल्लाकर अंदर से बाहर निकल गया और स्वामी से कहा दयालु मुझे मारना नहीं मैं वापस जा रहा हूँ । इस तरह स्वामी के डर से काल भाग गया ।

श्रीजी महाराज के धाम में जाने के बाद छ मास पर सच्चिदानंद स्वामीने श्रीहरि का अखंड स्मरण करके अक्षरधाम को प्राप्त किया ।

महासुख का मार्ग

लालजी भाई दलपतभाई पटेल (भडाणा)

आज अपनी बडी भाग्य है जो सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान को हम पहचाने है और ऐसा दिव्य सत्संग प्राप्त किये हैं । परिणाम स्वरूप भौतिक समृद्धि से पूरिपूर्ण हैं इसी को सच्चा सुख मानबैठे हैं । यह चथार्थ नहीं जगतका सुख सब झूठा है । लेकिन - जब अच्छा सुनना, देखना अनुकूल स्पर्श अथवा मजेदार खाना-पीना नहीं मिलता और अपनी अपेक्षानुसार व्यवहार नहीं मिलता तो कितने दुःखी हो जाते हैं । और उस समय भौतिक सुख क्या आप को सुख दे सकता है ।

अनादिकाल से यह अनुभव तथा मान्यता हैं । परिणाम स्वरूप सत्संग में रहने के बाद भी कुछ सुख की गहरायी का स्पर्श होता है - क्योंकि हमें इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण मिले हैं - जिन्होंने महासुख का मार्ग बताया और उसी मार्ग पर चलते रहने से आत्यंन्तिक कल्याण सम्भव है अन्यथा संसार की भवाटवी में भटकना ही पड़ेगा । यद्यपि महासुख का मार्ग कठिन है जिससे उस मार्ग पर चल नहीं पाते । परिणाम स्वरूप महाराज की मूर्ति के दर्शन स्मी महा सुख से वंचित हो जाते हैं ।

गुणातीतानंद स्वामी ने कहा है कि पंचविषय संबन्धी सुख दुःख से मिश्रित ही होता है । केवल दुःख बिना का सुख तो भगवान की भक्ति में है । यही सच्चा सुख है यही महा सुख है ।

लेकिन दुःख तो यह है कि हमारी स्थिति ठीक वैसी है जैसे गीध कितनी ऊचाई पर चला जाय तो भी उसकी दृष्टि हाड़ पर ही रहती है । ठीक ऐसी स्थिति अपनी है अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण तथा सत्संग को छोड़कर अन्यत्र सांसारिक तुच्छ पंचविषय स्मी मायिक सुख में जीव लग जाता है ।

इस करुणा के पीछे भी भगवान की माया ही बलवती है । जिस पर ब्रह्मानंद स्वामीने सत्य कहा है -

अहो प्रभु अचरजमाया तुम्हारी,
जिसमें फंसे सकलनरनारी ।
ब्रहमा मोहे शंकर मोहे
मोहे इन्द्र बलकारी
सनकादिक नारदमुनि मोहे
दुनियां कौन विचारी अहो प्रभु

भगवान की माया के आगे दुनिया विचारी हो जाती है । हम भगवान स्वामिनारायण के साथ जुडकर उनके बने हैं तो दुःखी होने की या डरने की आवश्यकता नहीं. जैसे कोई राजा का लड़का हो उसके सामने किसी का चलता न हो जो चाहे वही करलेता है । लेकिन उसे यहभान न हो कि वह राजा का लड़का है तो राजा का लड़का होने पर भी वह कुछ नहीं कर सकता । ठीक यही स्थिति अपनी है कि अनपे को हम जान ही नहीं सके है । जिस कारण महासुख से वंचित हैं । अपने इष्टदेव के महात्म्य को जानकर हिंमत से संतो का सहारा लेकर शिक्षापत्री तथा वचनामृत जैसे अमूल्य ग्रन्थो में बताये गये मार्ग का अनुसंधान करते हुए पंचविषय संबन्धी सुख से वैरभाव रखते हुए भगवान तथा संत की सेवा में लगकर भगवान में एक निष्ठा भक्ति करनी चाहिए । तो माया के जाल से छूट जायेंगे और महा सुख को प्राप्त कर सकेंगे ।

इस प्रकार करने से महासुख मिलने में सुगमता होगी । अन्यथा यह मार्ग दुराराध्यतो है ही । जैसे इस लोक में उत्तम गुणवाली वस्तु को खरीदने के लिए कई स्थानो पर जाना पडता है सरलता से नहीं मिलती । इसके लिये प्रयत्न तो करना ही पड़ता है । यदि सांसारिक वस्तु में यह स्थिति है तो पारलौकिक सुख-महासुख-मोक्ष भगवत्प्राप्ति के लिये तो अधिक प्रयास करना ही चाहिए ।

हे भक्तों ! अब तो सिंहपुरुषार्थ करना ही चाहिए । अन्यथा जैसे कोई कुत्ते को पत्थर मारे तो कुत्ता पत्थर को पकड़ता है व्यक्ति की तरफ मात्र दृष्टि ही रहती है परिणाम स्वरूप बार-बार वह पत्थर मारता है । लेकिन कोई सिंह को पत्थर मारे तो सिंह पत्थर मारने वाले को ही पकड़ लेता है परिणाम स्वरूप उसे बार-बार पत्थर खाना नहीं पड़ता । इसी प्रकार यदि सिंह जैसा पुरुषार्थ हम करें तो गर्भजनित वासना कुत्ते की तरह बार-बार सहना न पड़े । इसलिये इस पीड़ा से मुक्त होने के लिए माया को दूर करना होगा और अपने इष्ट को पहचानना होगा ।

गुणातीतानंद स्वामी कहते कि बछड़े को दूध का स्वाद और जोंक को खून का स्वाद होता हैं । इसी प्रकार जीव अनादिकाल से माया के जाल में फंसकर जोंक की तरह रक्त का अर्थात् संसारका स्वाद लेता है । देवानंद स्वामीने कहा है कि -

लक्ष चौराशी जातना आवे देह अपार
जन्म-मरण गर्भवासका हारे दुःख
वारंवार प्रभु भजी लेरे

इसी प्रकार तो जन्म मरण का फेरा लगा ही रहेगा । इसलिये - सार - असार को जानकर विवेकी पुरुष को चाहिए कि महासुख के मार्ग पर चलते ही रहना चाहिए । जिससे अपने इष्टदेव को पासकें । ऐसी इष्टदेव भगवान श्रीस्वामिनारायण के चरणों में प्रार्थना।

दान की महिमा

जयंति भाई के.सोनी (मेमनगर)

जीवन में भगवान के अलांवा कुछ भी अधिक नहीं होना चाहिए

भगवान विना अन्यत्र अधिक मानना ही भक्ति में कमी होगी। एक सत्यं घटना है गढडा से श्रीजी महाराज वडताल उत्सव करने का संकल्प किये। इतने में दादा खाचर प्रात: श्रीजी महाराज का दर्शन करने आये, उस समय महाराजने कहा, कल यहॉ से वडताल उत्सव हेतु जाना है। तब दादा खाचरने कहा महाराज यहीं उत्सव करिये। देश देशन्तर के हरिभक्तो को पत्र लिखिये कि इस वर्ष गढडा में उत्सव करना है। अत : सभी भक्तजन गढडा में पधारे। पत्र पाने के साथ सभीजन गीत गाते हुए गढडा में आये। उस समय गढडा आते समय खारा पाट में एक गांव के पटेलने पूछा आप लोग गीत गाते हुए कहॉ जा रहे है। तब हरिभक्तो ने कहा हम लोग गढडा में स्वामिनारायण भगवान के दर्शन के लिये जा रहे है। तब पटेल ने कहा स्वामिनारायण भगवान हैं ? हरिभक्तो ने कहा हॉ स्वामिनारायण भगवान है। तो पटेल ने कहा आप लोग खडे रहिए भगवान को देने के लिये कोई उत्तम भेंट लाता हूं। पश्चात दश स्मये लाया और कहा कि भगवान के चरण में भेंट रख दीजिएगा। बाद में हरिभक्त लोग गढडा आयें सभीने दर्शन किया और यथोचित भेंट चरण में रखे। लेकिन पटेल द्वारा दश स्मये की भेंट रखना भूल गये। बाद में तो भगवान ने सामने से पटेल के दश स्मयेकी भेंट मांगली और माथे पर रखकर नाचने लगे। यह देखकर ब्रह्मानंद स्वामी ने पूछा क्या हुआ महाराज ? तब भगवान ने कहा अच्छे समय पर यह स्मया मिला है इसे देने जाना होगा।

छ मास बाद पटेल की शरीर में कोढ निकला और मरने के लिये समुद्र में गये गाडी चालक को साथ लेकर गये और उसे पांच स्मये देने को कहे और कहे की यह बात किसी से नहीं कहना। मैं इस समुद्र में मरने के लिए आय हूं। बाद में धीरे धीरे लकडी के सहारे से समुद्र की तरफ बढने लगे। इतने में श्रीजी महाराज वृद्ध ब्राह्मण का स्म धारण करके वहां आये और कहे कि पटेल तुम कहै जा रहे हो ? तब पटेलने कहा सगा संबन्धी के यहॉ जा रहा हूं। श्रीजी महाराजने कहा तपस्वी बाह्मण के आगे झूठ नहीं बोलना चाहिए। महाराजने कहा आप समुद्र में डूबने जा रहे है ? तो पटेल ने कहा हा डूबने जा हा हूं। श्रीजी महाराजने कहा मेरा वचन मानकर आप अपने घर जाइए आपका रोग थोडा दिन में ठीक हो जायेगा। अन्यथा इस समुद्रमें डूबना ही होतो आप अपने दश स्मये का दश हजार की दश थैली ले लो। तब पटेल ने कहा हमने आपको दश स्मये तो दिये नही थे। तब महाराज ने कहा हमारे सत्संगी गढडा आ रहे थे उस समय आपने दश स्मये दिये थे। यह अपना आप ले लीजिये मैं किसी का उधार नहीं रखता हूं। तब पटेल ने कहा क्या आप स्वामिनारायण भगवान है ? भगवान ने कहा हॉ ? बाद में श्रीजी महाराज में निश्चय हो गया और घर वापस गये। घर जाने के बाद थोडे ही दिन में आराम हो गया। बाद में कुछ स्मये लेकर प्रत्यक्ष भगवान के पास गये। भगवान का दर्शन करके नियम लिए और वापस घर आये। अन्तकाल में भगवान उन्हे अक्षरधाम में ले गये। ऐसे दयालु भगवान है। इस लिए भगवान में निश्चय होना आवश्यक है मनुष्यजीवन की सार्थकता है। महाराज की तरह ही भगवान के छठे वंशज प. पू. ध. धु. आचार्य महाराज श्रीभी परम दायलु है। सम्पूर्ण गुण धर्म दादा के उनमें है जिनके दर्शन से सकल मनोरथकी प्राप्ति होती है।

इस लिये प्यारे भक्तजन ? सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानको दश स्मये देने पर यदि कई गुना अधिक हो सकता है। तो हम भी महारज की आज्ञानुसार दशांश विशांश भाग धर्मादा देव को देंगे तो उसका अनेक गुना करके महाराज हमें देंगे। इस लियं प्रत्येक हरिभक्त धर्मादा अचूक करें।

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

संसार में रहकर सत्संग हो सकता है

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

किसी गाँव का अगुआ अपने घोड़े को लेकर बहुत दूर जाकर वापस आ रहा था दूर सफर करने से थकान लगी थी और ऊपर से धूप भी तप रही थी प्यास लगी थी, साथ ही घोड़ा भी प्यासा था । घोड़े की चिंता अधिक थी क्योंकि उससे बहुत प्रेम करता था । अगल-बगल पानी की खोज में देखते आ रहा था । दूर से एकवाडी दिखाई दी । कुछ आशा की किरण निकली । हरियाली दिखाई देने लगी । पानी होगा यह समझकर घुड सवार उसी तरफ चलदिया । योगानुयोग वाडीका मालिक भी वही था । कोस चला रहा था । यह उस समय की बात है जब पानि निकालने के अद्यतन साधन नहीं थे । चमडे के थैले से पानी निकाला जाता था ।



घुडसवार कुंवा के पास आकर खड़ा हो गा । कुंवे में रस्सी छोड़ी तो उसमें से कीचुड-कीचुड की आवाज आने लगी और घोड़ा भाग कर दूर खड़ा हो गया । घोड़सवार ने कहा भाई ? यह कीचुड कीचुड की आवाज बंद कर दो मेरा घोडा भड़क रहा है । उसने पानी खींचना बंद कर दिया तो आवाज भी बंन्द हो गयी । अब घोड़ेको पानी की टंकी के पास ले आया । लेकिन पानी तो था ही नही क्योंकि पानी जब भी खींचे तब आवाज आये और घोड़ा दूर भाग कर खड़ा हो जाता था ।

खेडुत को ऐसा तो था ही नही कि मैं पानी न पिलाऊ लेकिन जब पानी खींचने के लिए डोरी कुंयें में डालता ही आवाझ आती तब घुडसवार घोड़े के भड़कने के कारण मना कर देता । फिर घुडसवार ने पूछा कि खेडुत भाई ? टंकी में पानी क्यों नहीं है । तब खेडुत ने बताया कि यदि आपको पानी पीना ही हो तो आबाज चालू रहेगी पानी मिल सकेगा । इसलिए आपको तथा आपके घोड़े को पानी पीना हो तो घोड़े को चुचकार-पुचकार के हाथ फेरके जैसे भी करके पानि पिलालो । बाद में घुड़सवार ऐसी युक्ति लगाई और पानी पिलाया ।

इस जगत में अनेक समस्यायें हैं जो कीचुड़-कीचुड़ जैसी ही हैं । यदि इनकी राह देखते रहोगे तो ईश्वर भक्ति सत्संग, सेवा कुछ भी नहीं हो सकेगा । यह सब तो अपने ढंग से चलते ही रहने वाला हैं । यह सब संसार के कीचुड़ कीचुड़ जैसा ही हैं, हमे अपने ढ़ंग से करना है अर्थात् स्वामिनारायण भगवान ने शिक्षापत्री में कहा है कि -

"कार्यो धर्मस्तु सत्वरम्"

धर्म सम्बन्धी कार्य तत्काल करना चाहिए, इसमें उम्र की राह नहीं देखनी चाहिए । ध्रुवजी, प्रहलादजी, दादाखाचर, पर्वतभाई, जीणाभाई, सुन्दरजीभाई, करजीसड़के गोविन्दभाई, वहेलाल के जेसिंगभाई आदि भक्तोंने संसार में रहकर, प्रवृत्ति में रहकर भी भगवान की भक्ति किये हैं । इसलिये संसार में रहकर भी भजन भक्ति हो सकती है ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में श्रीमद् भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं भावी आचार्य लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. महंत शा. स्वा. निर्गुणदासजी की प्रेरणा से ग्राम कोठा के प.भ. शंकरभाई अमथालाल पटेल तथा उनकी धर्मपत्नी के जीवनचर्या के निमित्त उनके परिवार की तरफ से दि. ५-७-०४ से ११-७-०४ तक सर्वावतारी श्रीनरनारायणदेव के सांनिध्य में श्रीमद् भागवत पारायण का आयोजन किया गया था। जिसके वक्तापद पर स.गु. शा. सिद्धेश्वरदासजी एवं. को.स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी विराजमान होकर कथाका लाभ दिये।

ता. ११-७-०४ के दिन प.पू. बाल लाल व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज के जन्मोत्सव पर यजमान परिवार ने श्रीहरि के तीनो अपर स्वरूप का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। सतत सात दिन तक शहर के हरिभक्त लोग कथा का दिव्य लाभ लिये। इस प्रसंग पर भंडारी स्वा. धर्मप्रकाशदास, मुक्तजीवन स्वा., यज्ञप्रकाश स्वा, पार्षद रसिक भगत सुन्दर सेवा करके सभी की प्रसन्नता को प्राप्त किये थे। *- को. सत्यप्रकाशदासजी*

जेलपुर वाडी संस्कृत पाठशाळा के विद्यार्थी संत पार्षदों द्वारा सत्संग प्रवृत्ति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर धाम में संत एवं ब्राह्मण बालक संस्कृत का उत्तम अभ्यास करते हैं।

जिन में संस्कार का सिंचन एवं सम्प्रदाय के मूलभूत सिद्धांन्तों का शिक्षण दिया जाता है। दोनों देश के संत ब्राह्मण किसी भी भेद भाव के बिना अद्यतन व्यवस्था केसाथ उभ्यास का लाभ ले रहे हैं। इस वर्ष नीचे के अनुसार संतो की संख्या है।

अमदाबाद-२०, वडताल-११, गढडा१, मूली-५, जूनागढ-१७, धोलेरा-२, ब्राह्मणो की संख्या-२२ इस प्रसार कुल ८० विद्यार्थी विद्या का लाभ ले रहे है।

असलाली, गामडी, नारायणनगर, वडाल, मिरोली, नाझ, वसई, साणंद, निधराड, मोधावी, मनीपुर, जीवराजपार्क, मेघाणीनगर, सेटेलाईट, वाडज, भात, काशीन्द्रा, चलोड़ा, पालडी, कलोली, महीज, पीपलज, नवागाँव, मलाव, बोरजा, महीजड़ा इत्यादि गाँव में संत लोग कथा लाभ दे रहे हैं। ऐसी सुन्दर प्रवृत्ति पू. पी.पी. स्वामी तथा पू. महंत शा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से वाडी के संचालक हरिओंप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में प्रगति हो रही है। उपरोक्त गाँव के हरिभक्त इन सभाओं से खूब प्रभावित हुए है।

-के.पी. स्वामी, जेतलपुर महंतश्री

अंबाजीमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीका पदार्पण

कांकरिया मंदिर के महंत स्वा. गुरुप्रसाददासजी एवं कोठारी स्वा. आनंदप्रसाददासजीकी प्रेरणा से ता. २४-७-०४ के दिन सुप्रसिद्ध विश्वशक्ति पीठ अंबाजी के सांनिध्य में विशाल सभा एवं कष्ट भंजन देव के पाठका आयोजन किया गया था।

इस प्रसंग पर यजमानश्री के आमंत्रण को स्वीकार कर प.पू. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। मंदिर के सुन्दर प्रांगण में बैन्ड बाजा तथा आतिश बाजी के साथ महाराजश्री का स्वागत किया गया था। अहमदाबदा मंदिर के महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी, जेतलपुर से पी.पी. स्वामी, मूली से मुकुन्द स्वामी, महंत शा. हरिकृष्णदासजी, आदि संत सभा में सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का माहात्म्य एवं मूल परम्परा को बताया तथा दोनो गादी संस्थान के रहस्य को भी बताया।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया। यजमान परिवार ने पू. महाराजश्री की आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया।

प.पू. महाराजश्री की भोजनादिक व्यवस्था राजू स्वा, वासुदेव स्वामी, नरोत्तम भगतने की थी।

छपैया धाम में सर्वावतारी श्री घनश्याम महाराजका १५३वां वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण का दिव्य जन्म स्थान छपैया धाम में

वंशपरंपराता सभ्यो की सूची प्रकाशन के बारे में

अपने श्री स्वामिनारायण पत्रिका की सर्वोपरि सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तता भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा आशिर्वाद से दींदिन प्रतिदिन प्रगति हो रही है। सभ्य बढते ही जा रहे है। जो बताता है की इस अंक के प्रति बाचको की रुची बढती जा रही है। जिसमें अंक प्रतिनीधी की सेवा भी अमूल्य है। अब से इस अंक में प्रतिनीधी द्वारा बनाया था कार्यालय में हुए सभ्यो की संख्या प्रकाशित की जाएगी। अपने प्रतिनिधि को अपनी इस सेवाप्रवृत्ति को अन्य को बताने की इच्छा नहो उन्हे देव तथा उनके पुत्र धर्मवंशी आचार्य की विशे, प्रसन्नता मिले एसी इच्छा होती है।

- तंत्रीश्री

विराजमान बाल स्वरूप घनश्याम महाराज तथा श्री धर्मदेव भक्तिमाता श्री हरिकृष्ण महाराज आदि देवों का १५३वां वार्षिक पाटोत्सव प.पू. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से एवं महंत स्वा. वासुदेवानंदजी की प्रेरणा से ज्येष्ठ शुक्ल-११ ता. ३०-५-०४ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. बाल लालजी महाराजश्री के शुभ हांथो से ठाकुरजी का महा अभिषेक वेदविधिसे किया गया।

अ.नि.प.भ. शेठश्री शिवलालभाई चतुरभाई ठक्कर के पुत्र प.भ. बाबुभाई ठक्कर परिवार के यजमान पद पर पाटोत्सव मनाया गया। इस प्रसंग पर अहमदाबाद, जेतलपुर, मूली, इल्हाबाद, अयोध्या, लीमडी इत्यादि स्थानो से संत पधारे थे। पू. पी.पी. स्वामी, शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी इत्यादि संतोने सभा में घनश्याम महाराज का तथा धर्मकुल का वर्णन किया।

यहाँ पर मंदिर के युवा संत ब्र.शा. हरिस्वरूपानंदजी, कृष्णस्वरूपादनंदजी, अविनाशानंदजी, पवित्रानंदजी आदि संतोने सुन्दर सेवा की थी। यहाँ अधिक मास में महापूजा, अभिषेक, अन्नकूट, हिंडोला इत्यादिका आयोजन किया गया था। *- कनुभाई दवे)*

श्री स्वामिनारायण मंदिर आयोध्या में पाटोत्सव एवं पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अयोध्या में शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा अयोध्या मंदिर के युवा महंत स्वा. अक्षरप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अयोध्या मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव अ.सौ भाग्यवती लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाकी प्रेरणा से मोरबी मंदिर की सां.यो. बा राजकुंवरबा तथा सां. उषाबा की तरफ से त्रिदिनात्मक पारायण एवं शिखरध्वज, कलश इत्यादि के निमित्त अयोध्याचरित्र की कथा शास्त्री स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। गोविंददासजी के शिष्य, धर्मजीवनदासजीके शिष्य एवं हरिभक्तोने सोना की सेवा की थी। इस अवसर पर प.भ. दामोदरदास गांडाभाई पटेल कां. तथा पटेल वसंतभाई नवीन तथा रमेशभाई आदि पटेल कां. वालों ने छोटी बड़ी सेवा की थी।

इस प्रसंग पर अदमदाबाद से स.गु. शा. हरिकृष्णदासजी, स.गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी इत्यादि संतोने दर्शन का लाभ दिया।

प.पू. आचार्य महाराजश्रीने ठाकुरजीका पाटोत्सव अभिषेक अपने हाथों से किया, यात्रीलोग इस दर्शनका लाभ लेकर धन्य हो गये। बहनों की गुरु लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाने ध्वजदंड एवं कलस की पूजा की थी।

प.पू. आचार्य महाराजश्री यहाँ तीनदिन रहकर सभी को दर्शन का लाभ दिये थे। *- महंत शा. नंदकिशोरदासजी, अयोध्या*

सुमेरपुर (राजस्थान) में प.पू.ध.धु. लालजी महाराजश्री का पदार्पण

कांकरिया मंदिर के महंत स्वा. गुरुप्रसाददासजी और कोठारी आनंद स्वामी की प्रेरणा से राजस्थान के सुमेरपुर (जी. पाली) के हरिभक्तो के आमंत्रण से दि. ३-७-०४ को प.पू. लालजी महाराज पधारे थे। तथा सत्संग सभा में भक्तों के भाव पूर्ण कर सभी पर प्रशन्न हो कर आशीर्वाद दिये और युवक मंडल की स्थापना की। जयपुर शिबिर में जाते वक्त रास्ते में इस गाँव मे पधारे थे। साथ में विसनगर के प.भ. उदयनभाई, राजु स्वामी और सिध्धेश्वर स्वामी थे।

इस अवसर पर प.भ. बाबुभाई पटेल के निवास स्थान पर सुंदर व्यवस्था की गई। *- बाबुभाई पटेल, सुमेरपुरा*

मथुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर मथुरा में स.गु. महंत शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजीने यहाँ पर परम्परानुसार गुरुपूर्णिमा के दिन सम्प्रदाय के आचार्य प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की पूजा किया। सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री की सुन्दर प्रतिमा रखकर गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप इत्यादि से विधिपूर्वक पूजा किये और सभी को आचार्य तथा गुरु का महत्व बताकर धर्मकुल का माहात्म्य बताये। यहाँ पर गुजराती भक्त तथा यहाँ के रहनेवाले लोग दर्शन पूजन का लाभ लेकर धन्य हो गये थे। पूजारी स्वामी तथा नरेन्द्र भगत सुन्दर सेवा करके सभी को भगवतप्रसाद को खिलाये। *- पु. सर्वेश्वरदासजी*

डुभाणामें (ता. विरमगाम) सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से एवं प.पू. लालजी महाराजश्रीकी प्रेरणा से ता. ७-६-०४ के दिन इस प्रसादी के गाँव में पू. पी.पी. स्वमी जेतलपुर से संत-मंडल के साथ पधारे थे। साथ में नरहरि स्वामीभी आये थे। तीन घन्टे तक धुन का कार्यक्रम रखा गया था। सर्वोपरि भगवान के चरित्रों की कथा सुनकर

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के कार्यकर्ताओं के लिये सूचना

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कामध्यस्थ कार्यालय श्री स्वामिनाराण मंदिर कालुपुर में कार्यरत है।

समय : प्रात : ८-०० से ११-०० तक

फोन : ०७९-२२१६६७६७

भक्तजन आनन्द विभोर हो गये थे। श्रीजी महाराज के प्रसादी के गाँव में सुन्दर भक्तिमय वातावरण बन गया था। इस प्रसंग पर कालियाणा के प.भ. डाह्याभाई बुटिया, प.भ. भीखुभाई आदि आगेवान हरिभक्त जन सेवा में भाग लेकर धन्यता का अनुभव किये थे।- *डाह्याभाई बुटिया*

कालियाणा गाँव में सत्संग सभा

प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से ता. ३-६-०४ के दिन जेतलपुर से शा. ईश्वरजीवनददासजी (धरियावद मंहत)ने कथा का सुन्दर लाभ दिया था। देव शयनी एकादशी के दिन १२ घन्टे की अखंड धुन का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर प.भ. डाह्याबाई बुटिया, प.भ. भीखुभाई, कोठारी श्री, हीराभाई तथा गाँव के भक्त लोग कथा का लाभ लिये। *-प्रकाशभाई मोरी*

थोबाउ गाँव में (वाली प्रदेश राजस्थान) प्राणप्रतिष्ठा उत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से थोबाउ श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव तथा हरिकृष्ण महाराजकी प्राण प्रतिष्ठा तथा श्रीमद् भागवत महापुराण का पारायण एवं महाविष्णुयाग की पूर्णाहुति का आयोजन किया गया। भागवत के वक्ता पद पर शा.स्वा. चन्दप्रकाशदास (बीलीया) विराजमान होकर सभी भक्तों को कथामृत का लाभ दिये। इस महोत्सव का आयोजन बिलीया मंदिर के महंत स्वामी घनश्यामदासजी, निर्मलदासजीने किया था। इस अवसर पर जेलातरा के हरिभक्तों ने भोजन की सेवा तथा दूसरे गाँव के हरिभक्त भी भाग लिये थे। उस से भी थोभाउ गाँव की सेवा तो चिरस्मरणीय रहेगी अहमदादा मंदिर के महन्त शा.स्वा. निर्गुणदासजी, प्रेमस्वरूपदासजी, इत्यादि संतोनें प.पू. महाराज के प्रति तथा नरनारायणदेव में भक्ति की निष्ठा प्रतिव्रता धर्म की तरह रखनी चाहिए ऐसा उपदेशात्मक प्रवचन दिया। भगवान श्री स्वामिनारायणने स्वहस्त द्वारा आचार्य महाराजश्री को गादी प्रदान किया और गुरुके स्थान पर आरूढ किये। वाली प्रदेश में अन्य भगवाधारी संत आते हैं, उससे सावधान रहने की आवश्यकता है। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को आन्तरिक आशीर्वाद दिया। और कहा कि सभी लोग एक निष्ठा में रहकर नरनारायणदेव में भक्ति बनी रहे ऐसा थोबाउ गाँव जनों को आशीर्वाद दिया।

- एच.आर. सुथार

श्री नरनारायणदेव गादी संचालित श्री एच.डी. गार्डी सहजानंद हाईस्कूल झिलवाणा

पाटण जिले के अन्तराल में झिलवाणा गुरुकुल हैं, जिसका संचालन श्री नरनारायणधेव गादी संस्थान द्वार होता हैं। यहाँ काफी पछात वर्ग के लोग हैं। जिसके उत्थान के लिए यह संस्था सम्पूर्ण योगदान कर रही है।

इस वर्ष कक्षा ८ तथा ९ का १००% परिणाम रहा है। कक्षा ९ का परिणाम १००% रहा है। श्री तेजेन्द्रप्रसादजी उ.मा. शाला ११वीं की अनुमनति मिल गयी हैं। जिसमें प्रवेश कार्य चालू हैं।

- आचार्यश्री झीलवाणा

हिंमतनगर मंदिर में अधिक मास

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. भावी आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी की प्रेरणा से बाल स्वरूप घनश्याम महाराज के सानिध्य में अधिकमास में १८-७-०४ से ता. १५-८-०४ तक वर्ष पर्यन्त उत्सव मनाया जाता है। हरिभक्त यजमान बनकर दिव्यलाभ लेते हैं। हिंमतनगर मंदिरें वहाँ के हरिभक्त विशेष आनन्द का लाभ ले रहे हैं।

- स्वा. धर्मकिशोरदासजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर में अधिकमास

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर में श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराजके सांनिध्य में अधिक मास का उत्सव १५ दिन से सम्पन्न किया गया। प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथों से पाटोत्सव महापूजा सम्पन्न की गयी। पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से अनेकों हरिभक्त यजमान बनकर उत्सव का लाभ लेते है।

सम्पन्न उत्सव

१-८-०४ से ४-८-०४ श्रावण वद-१ से वद ४ हिंडोला दर्शन, प-८-०४ से वनविचरण, ६-८-०४ कुंजगली, ७-८-०४ शाकोत्सव, ८-८-०४ अभिषेक अन्नकूट, ९-८-०४ नंदमहोत्सव, १०-८-०४ से १२-८-०४ से जेतलपुर लीला। १३-८-०४ शिवरात्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर श्रीनाथजी में यात्रिक हरिभरवर्तो के लिए अद्यतन सुविधा

पपू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-शीर्वाद से राजस्थान के सुप्रसिद्ध श्रीनाथजीमें श्री नरनारायणदेव गादी हस्तक देश-विदेश के यात्री हरिभक्तो के लिए अद्यतन वातानुकुलित उतारा की सुंदर सुविधा उपलब्ध है। अपने प्रत्येक हरिभक्त यही स्कने का आग्रह रखे।

नोंघ : यहाँ आने से पूर्व स्म फोन द्वार बुक करवाये।

महंत स्वामी, धर्मस्वस्मदासजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर धर्मशाला

श्रीनाथजी फोन : (०२९५३) २३१३६३

पूजन । १४-८-०४ छपैया दर्शन, १५-८-०४ अन्नकूट दर्शन ।- *महंत स्वामीश्री*

श्री स्वामिनारायण मंदिर सेक्टर-२ गांधीनगर

गांधीनगर अधिक श्रावण मास तथा श्रावण मास के विविध दर्शनों का आयोजन ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर सेकटर-२ गांधीनगर में श्री नरनारायण पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामी स.गु. ध्यानी स्वामी के मार्गदर्शन में तथा हरिभक्तों ने श्रावण मास में धर्मवृद्धि के लिए नानाविध आयोजन किया ।

प्रतिदिन दर्शन में - हिमालय दर्शन, पुल्हाश्रम दर्शन, अमरनाथ में बरफ के शिवलिंग का दर्शन, बारह दरवाजे का हिंडोला दर्शन, आम की डाल पर झूलते घनश्याम महाराजका दर्शन, सात धाम में विराजमान मूर्तियों का दर्शन, छपैया अयोध्या, भुज, गढडा वडताल, धोलेरा, जूनागढ आदि धामों में विराजमान देवों का दर्शन एक साथ ही सम्पन्न हो रहा है ।

इस दर्शन का लाभ ता. २५-७-०४ से प्रारंभ हो गया है ता. ३१-८-०४ तक यह दर्शन होता रहेगा । इनका दर्शन करने के इच्छुक सभी भक्तों को भावभरा आमंत्रण श्री स्वामिनारायण मंदिर सेक्टर-२ गांधीनगर द्वारा दिया जा रहा है ।

कुकरवाडा मंदिर में प.पू. बाल लालजी महाराजश्री का जन्मोत्सव सम्पन्न

कुकरवाडा मंदिर में प्रत्येक मंदिर की तरह सभी हरिभक्त मिलकर श्रीहरि के आठवे वंशज बाल स्वरूप प.पू. व्रजेन्द्रप्रसादजी का ७वाँ जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । इसमें आबालवृद्ध नरनारी ने भाग लिया । जिस में सभी ने भगवान से प्रार्थना की कि हमारे बाल लालजी महाराज देश देशान्तर धर्म की पताका लहरावें और मुमुक्षार्थियों को मोक्ष के मार्ग पर ले जायें ।

- भक्तिभाई पटेल

आबूरोड आश्रम में प.पू. लालाजी महाराजश्री पधारे

आबूरोड में नरनारायणदेव ताबा का आश्रम हैं । जिसमें ता. ३-७-०४ के दिन भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । यहाँ पर व्रजेन्द्रभवन तथा स्कूल का बांधकाम देखकर बहुत प्रसन्न हुए । इस वर्ष श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी प्राईमरी विद्या मंदिर को सरकार की मान्यता मिल गयी है ।

इस प्रसंग पर पू. महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी, पू.पी.पी. स्वामी, पा. वनराज भगत, पधारे थे । आबूरोड के हरिभक्तोने प.पू. लालजी महाराज का दर्शन करके धन्य हो गये । भोजनादिक व्यवस्था आश्रम में पा. नरोत्तम भगत तथा किशोर भगत ने किया ।- *नटुभाई पटेल*

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग द्वारा ली गई परीक्षा का परिणाम

श्री नरनारायणदेव शिक्षण विभाग प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-प्रेरणा से कई वर्षो से चल रहा है । गत वर्ष २००३ में ली गयी परीक्षा का परिणाम अधोनिर्दिष्ट हैं । कुल २८ केन्द्रों में २०१५ विद्यार्थियों ने परीक्षा दी थी ।

बाल सत्संग : १. निधिबहन घनश्यामभाई मेघाणीनगर १००% २. उर्मिबहन विनय भट्ट सहजानंद विद्यालय ९९% ३. मयंककुमार राजुभाई कोटेश्वर गुरुकुल ९८% ४. चोवटिया प्रशांत ए. असारवा गुरुकुल ९७% ५. गज्जर संकेत प्रवीणभाई डांगरवा ९५%.

किशोर सत्संग : १. परेशकुमार विष्णुभाई पटेल असारवा गुरुकुल १००% २. सापीश लालजीभाई कोटेश्वर गुरुकुल ९९% ३. कवितकुमरा मधुभाई असरावा गुरुकुल ९९% ४. उमेशकुमार अनिलकुमार असारवा गुरुकुल ९७% ५. आकाश अरविंदभाई असारवा गुरुकुल ९७%.

सत्संग परिचय : १. धुमल दिनेशभाई असारवा गुरुकुल १००% २. शशांक रमेशभाई असारवा गुरुकुल १००% ३. विशाल लालजीभाई असारवा गुरुकुल ९८% ४. प्रकाशभाई असरावा गुरुकुल ९८% ५. अमदीय भावजी डाभी डांगरवा ९७%.

सत्संग प्रवीण वचनामृत सूत्र : १. निकुंज एन. पटेल जुंडाल १००% २. रेखाबहेन हिंमतसिंह डाभी डांगरवा ९५% ३. पटेल नवनीत जयंतीभाई हर्षद मंदिर ९२% ४. कुंतलवहन गोविन्दभाई डांगरवा ९०% ५. खीचडिया महेन्द्रभाई वल्लभभाई हर्षद मंदिर ८९.

सत्संग वचनामृत सूत्र - ५ : १. मजुलाबहन रणजीतसिंह डाभी ८७% २.

साभार स्वीकार

गुजरात, कच्छ तथा सौराष्ट्र में महा विनाशक भूकंप आया था, जिसमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा संत इस गाँव में पधारे और उनके दुःख को देखकर उन्हे आवस्यकतानुसार आवश्यक वस्तुओं को देकर सान्तवना आशीर्वाद दिये थे । अनेक स्कूल, मन्दिर इत्यादी का निर्माण भी किया गया । इन सभी प्रवृत्तियों की मार्गदर्शिका पुस्तक स्व में भुज के प.भ. पो. सूर्यकान्त भट्ट साहब "भूकंप ग्रस्तो के लिए आचार्य महाराजश्री तथा संत वर्य" इस पुस्तक का प्रकाशन किया है । जिस की कोई कींमत नहीं है । स्वयं लेखक ने अपने खर्च से तैयार किया हैं । जिसे साभार स्वीकार किया जाता है ।

राकेशकुमार भरतसिंह डाभी ८३% ३. संजयकुमार भानुसिंह डाभी ८१%

कुल २०१५में से १७६० विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए । कुल परिणाम ९६.१४ था आगामी धार्मिक परीक्षा ता. १९-१२-०४ रविवार को ली जायेगी । प्रत्येक केन्द्र सचालक अपने केन्द्र की लिष्ट दें दें और फोर्म को ले जाये ।

संचालकश्री

श्री स्वामिनारायण धार्मिक शिक्षण विभाग श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अमदावाद-३८० ००१.

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

लींबडी मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर पूजन अर्चन कर सन्त हरिभक्तों ने सुन्दर लाभ लिया । महंत स्वामीने धर्मकुल का माहात्म्य समझाया गुरु तथा गुस्मूर्णिमा का रहस्य बताया । सी.सी. पटेलने सभा का संचालन किया । - *स्वा. मंदिर लीमडी*

श्री स्वामिनारायण संस्कार धाम धागधां

श्रीहरिके अपर स्वरूप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीका गुस्मूर्णिमा के प्रसंग पर ४००० जितने हरिभक्तों द्वारा गंधाक्षत पुष्पादि से पूजन किया गया ।

इस प्रसंग पर स्वा. रामकृष्णदासने धर्मकुल की परिभाषा बताते हुए कहा कि अपने आचार्य महाराजश्री ही गुरु है । धर्मकुल की महिमा को भी समझाये ।- *घनश्यामभाई सोलंकी*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

सीडनी (I.S.S.O. ओस्ट्रेलिया)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. भावी आचार्य लालजी महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग प्रवृत्ति तथा मंदिर निर्माण का कार्य सुंदर ढंग से चल रहा है ।

अप्रैल मास में सम्पन्न सत्संग सभा : ता. ४-४-०४ श्रीहरि का प्राकट्योत्सव अन्नकूट आरती, सत्संग, भजन, कीर्तन, आदि कार्यक्रममें हरिभक्तोंने अधिक संख्या में उपस्थित होकर लाभ लिया । १८-४-०४ के दिन मिहिरभाई ठक्कर, ता. २-५-०४ प.भ. दीलीपभाई दरजी, ता. १६-५-०४ प.भ. खीमजीभाई तथा प.भ. किरणभाई अमीन, ता. ३०-५-०४ I.S.S.O. सत्संग सभा ता, १३-६-०४ I.S.S.O. सत्संग, ता. १७-६-०४ I.S.S.O. समस्त सत्संग मंडल ।

प्रत्येक सभा में बड़ी संख्या में हरिभक्तों का समुदाय उपस्थित होकर भजन, कीर्तन, धन, कथा इत्यादिका लाभ लिया था । ता. ११-७-०४ की कथा प.भ. महेशभाई त्रिवेदी द्वारा सम्पन्न हुई । प्रत्येक सभा में त्रिवेदी जी आधा धन्ट गीता पाठ करते है । इसके साथ अर्थ घटन भी करते है ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग का कार्य उत्तम ढंग से चल रहा है । - *जीणा दरजी*

बुवी मेरीलेन्ड (I.S.S.O. वोशिंग्टन चेप्टर)

यहाँ पर ३-७-०१ के दिन शनिवार को सायंकाल तीन बजे सत्संग सभा सम्पन्न हुई थी । जिसमें कथावार्ता, कीर्तन, धुनि, शास्त्रों पर प्रवचन, नीत्य नीयम, चेष्टा, थाल, आरती इत्यादि का सामूहिक कार्यक्रम सम्पन्न होता रहता है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से सत्संग में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है ।

- *कनुभाई पटेल*

अक्षरनिवासी संत - हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

बळोल (भाल, मूलीदेश) : प.भ. गोविंदभाई वाधाभाई सिंधव (जिनके दादा पर श्रीहरि प्रसन्न होकर दिव्य धाम दिये थे, जो अभी नके यहाँ सुरक्षित है) श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए ता. ७-७-०४ को अक्षरनिवासी हुए है ।

मोटा अंकेवाळीया (धांगधा, मूलीदेश) : प.भ. भगवानभाई विठ्ठलभाई पारेजीया दि. २३-६-०४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

वहेलाल : प.भ. गोविंदभाई अंबालाल दि. १-७-०४ को अखंड स्मरणक रते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

प.भ. डाह्याभाई (मंदिर के पूर्व पूजारी) की धर्मपत्नी कंकुबा दि. २-७-०४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई है ।

मोडासा (साबरकांठा) : प.भ. शंकरभाई कोह्याभाई के धर्मपत्नी दि. १५-७-०४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई है ।

डेमाई (साबरकांठा) : प.भ. माधुभाई रेवाभाई पटेल दि. १०-७-०४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।





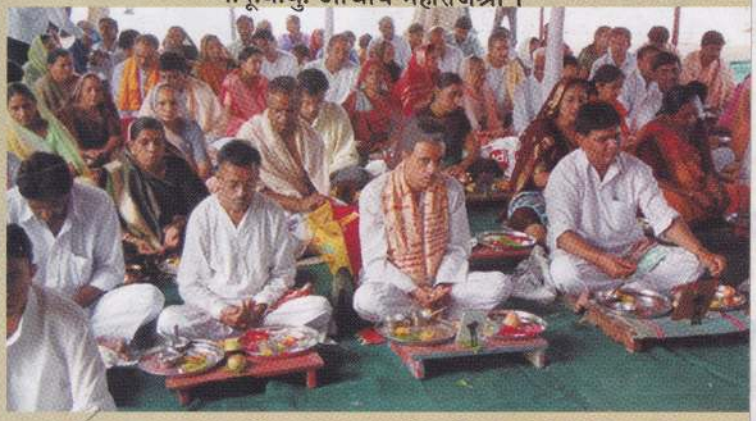
नारायणघाट मंदिर में अधिकमास के अवसर पर आयोजीत प्रदर्शन का उद्घाटन कर आशीर्वाद देते हुए महाराजश्री ।



नारायणघाट मंदिर में अधिकमास के अवसर पर आयोजीत कलात्मक हिंडोला की डोर खीच कर उद्घाटन करते प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



अधिकमास के अवसर पर रंगमहोल के श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक कर आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

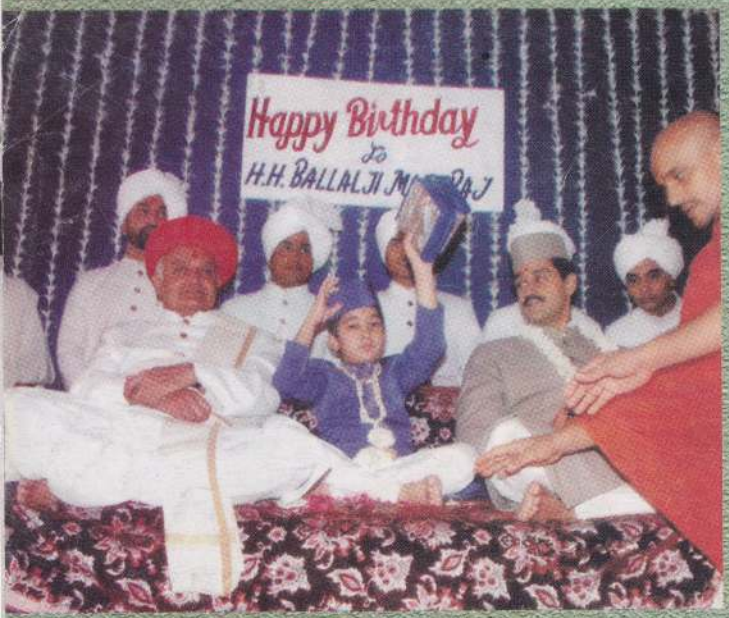


अधिक मास का अधिक लाभ, अपने प्रत्येक मंदिरो में अधिक मास भव्यातीभव्य तरीके से मनाया जा रहा है । एसा ही एक प्रसंग - नारायणघाट मंदिर में समूह महापूजा का लाभ लेते हुए हरिभक्तजन ।





गांधीनगर सेक्टर-२ के मंदिर में अधिक मास की भव्य तरीके से मनाया जा रहा है । प्रदर्शन का उद्घाटन करते तथा हिंडोला को निहारते हुए पू. ध्यानी स्वामी ।









प.पू. बाल लालजी महाराजश्री ७वें जन्मोत्सव के अवसर पर पू. दादा के साथ नरनारायणदेव की आरती उतारकर सभा में पू. लालजी महाराज तथा प.पू. महाराजश्री बीराजे तब संतो, हरिभक्तोकी विशाल मेदनी ने हर्षनाद से इस जन्मोत्सवको बढा दिया था ।